विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 13 अंक : 49 मार्च, 2020

विश्व भर में विश्व हिंदी दिवस 2020 का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, बाली, कैलिफ़ोर्निया, हैम्बर्ग, पोलैंड, सिंगापुर आदि देशों में हिंदी की धूम मची। विश्व हिंदी दिवस की गतिविधियों की रिपोर्ट पढ़ें।

पृ. 2 - 4

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 12वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में सचिवालय के सभागार में अपना 12वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाया। प्रथम सत्र में कार्यारंभ दिवस समारोह मनाया गया तथा द्वितीय सत्र में *'हिंदी कहानी का अध्ययन एवं विश्लेषण'* विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई। यह कार्यशाला दो दिवसीय रही।

पृ. 5 - 6

वर्धा में 'गांधीजी एवं भारतीय भाषाओं' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

23 जनवरी, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग तथा गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

पृ. 6

भोपाल में 'हस्ताक्षर हैं पिता' कविता-संग्रह का लोकार्पण

जनवरी, 2020 में भोपाल के स्वराज भवन में डॉ. लता अग्रवाल कृत पिता पर 1111 कविताओं का संग्रह 'हस्ताक्षर हैं पिता' का लोकार्पण किया गया। इसमें पिता को केंद्रित करके विभिन्न कोणों से कविताएँ रची गई हैं।

पृ. 10

'हिंदीभाषा डॉट कॉम' द्वारा सम्मान समारोह

2 मार्च, 2020 को इंदौर में वेब पोर्टल 'हिंदीभाषा डॉट कॉम' के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी भाषा के उत्थान में सहयोगी कलमकारों हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में रचनाशिल्पी सर्वश्री बाबूलाल शर्मा 'बोहरा', संदीप 'सृजन', मनोरमा जोशी, प्रो. शरद नारायण खरे तथा इदरिस खत्री को सतत उत्कृष्ट लेखन हेतु 'हिंदीशिल्पी-2019' से विभूषित किया गया तथा सतत लोकप्रिय रचनाशिल्प हेतु राजू महतो को सम्मानित किया गया।

पृ. 11

श्रद्धांजलि

सुषम बेदी

19 मार्च, 2020 को न्यूयॉर्क में सुषम बेदी का निधन हो गया। आप 74 वर्ष की थीं। आपका जन्म 1 जुलाई, 1945 को फिरोज़पुर, पंजाब में हुआ था। 1985 से आप कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफ़ेसर के रूप में कार्यरत रहीं।

पृ. 12

इस अंक में आगे पढ़ें :

संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला / व्याख्यान / जयंती / पुस्तक मेला	पृ. 6 - 9
लोकार्पण	पृ. 10 - 11
पुरस्कार / सम्मान	पृ. 11 - 12
श्रद्धांजलि	पृ. 12 - 13
सूचना	पृ. 14 - 15
संपादकीय	पृ. 16

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2020 का आयोजन

10 जनवरी, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया। समारोह का आरंभ दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ।

समारोह की मुख्य अतिथि उपप्रधान मंत्री व शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन रहीं। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री तन्मय लाल तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री माननीय श्री अविनाश तिलक के साथ आवास और भूमि उपयोग योजना मंत्री माननीय श्री लुई स्तीवन ओबिगादु, औद्योगिक विकास, एस.एम.ई. और सहकारिता मंत्री माननीय श्री सुमिलदत्त भोला तथा राष्ट्रीय मूलढाँचा और समुदाय विकास मंत्री माननीय श्री महेन्द्रनाथ शर्मा हरिराम ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सचिवालय ने इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के विशेष अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में यू.के. के प्राच्य अध्ययन संकाय, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय से एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिंदी) डॉ. इमरे बंघा को मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने कहा *"हिंदी अब किसी एक देश या समुदाय तक सीमित न होकर पूरे जगत में छा गई है। बोलचाल और लिखित दोनों ही रूपों में यह भाषा विश्व में प्रचलित होती जा रही है। कई देशों को और असंख्य लोगों को जोड़ने वाली इस भाषा की कीर्ति को आज उत्सव के रूप में मनाना हर प्रकार से उचित है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से उपजा विश्व हिंदी दिवस किसी भी पर्व या त्योहार से कम महत्त्व का नहीं है। भारी संख्या में हिंदी का उत्सव मनाने के लिए आप सब यहाँ उपस्थित हुए हैं। आपकी उपस्थिति से हिंदी की ख्याति का सुन्दर प्रमाण मिलता है।"* उन्होंने यह भी कहा *"नए साल के अवसर पर और विश्व हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में, मैं यह कामना करती हूँ कि विश्व में हिंदी की कीर्ति सभी दिशाओं में फैले। हिंदी के सेवकों की मेहनत दुगुना फल लाए और हिंदी को वह प्रतिष्ठा मिले, जो हम सब चाहते हैं।"*

डॉ. इमरे बंघा ने **'21वीं सदी में यूरोप में हिंदी-शिक्षण की चुनौतियाँ'** विषय पर वक्तव्य देते हुए वहाँ पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में हो रहे कार्यों व प्रयासों पर बात की। साथ ही उन्होंने कहा कि *"ब्रिटेन और हिंदी का गहरा ऐतिहासिक संबंध है, फिर भी हिंदी की पढ़ाई के इतिहास के बारे में हमें कम जानकारी मिलती है। उपनिवेशी प्रशासन के लिए ब्रिटेन में हिन्दुस्तानी भाषा ज़रूर पढ़ाई जाती थी, लेकिन उस समय नागरी लिपि में हिंदी की पढ़ाई के बारे में हमें जानकारी बहुत कम है।"* उन्होंने यह भी कहा कि *"हिंदी सीखने से आगे चलकर काम न भी मिले, फिर भी भाषा का साहित्य जैसा महत्त्व है ही। शिक्षकों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि भाषा सीखने से कोई समय बरबाद नहीं करता, बल्कि मानवता का विस्तार करता है और दूसरे देशों में परस्पर सम्मान व समझौता को बढ़ावा देता है। जो लोग कई भाषाओं में साहित्य पढ़ते हैं, उनको मालूम है कि हरेक भाषा का रस अलग है और भाषा का व्यक्तित्व भी अलग है। यह हमारा दायित्व है कि भविष्य में हमारे बच्चे भी इन रसों व मानव अभिज्ञताओं का आस्वादन कर सकें।"*

महामहिम श्री तन्मय लाल ने इस अवसर पर भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। अपने उद्‌बोधन में महामहिम ने सभी को विश्व हिंदी दिवस 2020 की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा *"हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिंदी आज भारत, मॉरीशस तथा कुछ अन्य देशों में ही सीमित नहीं है, बल्कि हिंदी भाषी लोग अब दुनिया भर के कई देशों में बसे हैं या कार्यरत हैं। आज विश्व में लगभग तिहत्तर देशों में, 300 संस्थानों में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। उनके द्वारा सोशल मीडिया पर हिंदी में पोस्ट और हिंदी में समाचार बुलेटिन का प्रसारण गत वर्ष से आरम्भ हुआ है। विश्व हिंदी सचिवालय भारत और मॉरीशस के अत्यंत घनिष्ठ संबंधों का प्रतीक तो है ही, यह कई मायनों में एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान जैसा है, जो हिंदी भाषा के प्रचार की दिशा में महत्त्वपूर्ण काम कर रहा है। यह सचिवालय हिंदी भाषा की हमारी साझी धरोहर को सुरक्षित रखने और उसे बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।"*

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री, माननीय श्री अविनाश तिलक ने कहा *"विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना से लेकर आज तक का सफ़र बड़ी अच्छी तरह से संभाला गया है। अपने विविध कार्यों द्वारा वह धीरे-धीरे हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ तक ले जाने के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जा रहा है। और मुझे पूरा यकीन है कि हम उस मंज़िल तक ज़रूर पहुँचेंगे, क्योंकि हिंदी आज एक अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। वास्तव में विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज हिंदी सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है और जितनी ही पुरानी है, उतनी ही प्रभावशाली भी। हिंदी केवल हिंदुस्तानियों के लिए नहीं है, हिंदी केवल भारत के लिए नहीं है, आज हिंदी पूरे विश्व की है और ऐसे देश में हैं जैसे दक्षिण अफ़्रीका, यू.एस., जर्मनी, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर, यू.के., कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि। हिंदी 175 विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाई जाती है। हमारे लिए गर्व की बात है कि मॉरीशस के लोग कई भाषाएँ बोलते हैं और उनमें हिंदी प्रमुख है।"*

समारोह के आरम्भ में सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों व सभी अतिथियों का स्वागत किया और सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी कहानी-लेखन प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की।

विश्व हिंदी पत्रिका के 11वें अंक का लोकार्पण

इस वर्ष सचिवालय ने अपने वार्षिक प्रकाशन 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 11वें अंक (मुद्रित व वेब प्रारूपों) का लोकार्पण किया। इस अंक में विश्व के विभिन्न प्रदेशों के हिंदी विद्वानों एवं लेखकों द्वारा प्रणीत 34 ज्ञानवर्धक आलेख सम्मिलित किए गए हैं, जो हिंदी के उद्भव एवं विकास, लिपि, साहित्य और संस्कृति, हिंदी के ई-संसार एवं जन-माध्यम,

हिंदी-शिक्षण, हिंदी के विविध आयाम तथा हिंदी के क्षेत्र में आज के प्रश्न से संबंधित हैं। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय कहानी-लेखन प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2019 में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी कहानी-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। नियमानुसार प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया था - 1. अफ्रीका व मध्य पूर्व, 2. अमेरिका, 3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), 4. यूरोप, 5. भारत। सभी क्षेत्रों से कुल 174 प्रतिभागियों ने भाग लिया। समारोह में मॉरीशस के दो विजेताओं (प्रथम पुरस्कार - श्री धर्मेन्द्र कुमार सिंह तथा द्वितीय पुरस्कार - श्रीमती कल्पना लालजी) को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भेंट किए गए। प्रतियोगिता का परिणाम सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

इस वर्ष भी इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा नृत्य नाटिका विश्व हिंदी दिवस के मंच पर प्रस्तुत की गई। नृत्य नाटिका का शीर्षक 'राम जन्म' रहा। कथक नृत्य शैली में संरचित यह नृत्य नाटिका रामायण के कुछ अंशों पर आधारित थी। इसमें प्रभु श्री राम के जन्म की कथा को नृत्य के माध्यम से दर्शाया गया। यह नाटिका संतान-प्राप्ति की कामना से राजा दशरथ का गुरु वशिष्ठ एवं ऋषि श्रृंग से परामर्श लेना, पुत्र कामेष्टि यज्ञ करना, श्री राम का जन्म, बधाई-नृत्य और नामकरण संस्कार तक की सुन्दर आध्यात्मिक यात्रा थी। परिकल्पना एवं नृत्य संरचना श्री करण गंगानी ने की। नृत्य कलाकार

श्रीदेवी दासीरेड्डी (कौशल्या), शैलजा सुमीत पराशर (कैकेयी), नेहा बालु लछुमन (सुमित्रा), बालकिशन बिसेसर (दशरथ), प्रीतम बल्लु लछुमन (वशिष्ठ मुनि, ऋषि श्रृंग), बेला रामधारी, प्रेमा रामधारी, खुशबू रामधारी, विमला लोबिन, आयुशी बिहारी, देशना जोगिया, सृष्टि जगरूप, कामालक्षी दयाल, खुशी दयाल, नाज़िश साकुलु, नीलम सिबर्न और यजनी आहोतर रहे।

इस अवसर पर विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी गण, शैक्षिक, धार्मिक व प्रचारक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य गण और मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों, लेखकों, प्राध्यापकों, शिक्षकों, छात्रों व हिंदी प्रेमियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मंच-संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

अन्य गतिविधियाँ

13 जनवरी, 2020 को महात्मा गांधी संस्थान, मोका में डॉ. इमरे बंघा के सान्निध्य में संस्थान के प्राध्यापकों के साथ एक परिचर्चा-सत्र का भी आयोजन किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2020 : भारत

दिल्ली

10 जनवरी, 2020 को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा दिल्ली में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर विदेश राज्यमंत्री माननीय श्री वी. मुरलीधरन, सचिव (पूर्व), श्रीमती विजय ठाकुर सिंह तथा संयुक्त सचिव (आर.बी.बी., आई. एंड टी) श्री संजीव बाबु कुरुप मंचासीन थे। माननीय श्री वी. मुरलीधरन ने प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा और कहा कि सरकार हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने तथा हिंदी को विदेश नीति एवं कूटनीति का माध्यम बनाने के लिए प्रयासरत है। विदेशों में भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने विदेशों में 66 अध्ययन पीठ स्थापित किए हैं, जिनमें से 25 हिंदी पीठ हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार का लगातार प्रयास है कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिले और संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिले। अभी तक हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा नहीं मिला है, लेकिन यू.एन. की वेबसाइट एवं सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

समारोह के दौरान हिंदी से संबंधित विषयों पर निबंध प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया।

साभार : पंजाब केसरी.इन

मुंबई

11 जनवरी, 2020 को मुंबई में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, वैश्विक हिंदी सम्मेलन तथा के.सी. कॉलिज के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय *'हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं का समन्वय'* रहा।

संगोष्ठी में वैश्विक हिंदी सम्मेलन के निदेशक डॉ. एम. एल. गुप्त 'आदित्य' ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि 'विश्व हिंदी दिवस' उत्सव का नहीं चिंतन का दिवस है तथा हमें विचार करना चाहिए कि भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन के लिए हिंदी एवं अन्य भाषाओं के समन्वय से क्या किया जा सकता है? संगोष्ठी के मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री रजनीश कुमार शुक्ल ने सृजनशीलता व मौलिक चिंतन के लिए अपना वक्तव्य भाषा को समर्थ बनाने की बात कही।

इस अवसर पर श्री अमरजीत मिश्र, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय की पूर्व निदेशिका व हिंदी विभागाध्यक्षा प्रो. माधुरी छेड़ा, श्री मधुसूदन नायडू, डॉ. हीरालाल कर्णावट, डॉ. शितला प्रसाद दुबे तथा प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध वैज्ञानिक डॉ. विजय भार्गव तथा पुलिस अधिकारी एवं महानिरीक्षक श्री कृष्ण प्रकाश को 'वैश्विक हिंदी सेवा सम्मान' से विभूषित किया गया।

वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई की रिपोर्ट

पटना

10 जनवरी, 2020 को पटना में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एस.एन. पी. सिन्हा ने किया। सम्मेलन के प्रधान डॉ. शिववंश पाण्डेय ने स्वागत भाषण दिया। समारोह में 'सुखमनी साहिब' के हिंदी पद्यानुवाद 'दिन-पत्री' का लोकार्पण, कवि-सम्मेलन तथा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ कवि राम उपदेश सिंह 'विदेह', श्री हरिमंदिर साहिब गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटि के महासचिव सरदार तेजपाल सिंह ढिल्लन, रमण सिंधी, रिज़वान अहमद, सरदार गुरदयाल सिंह, सरदार त्रिलोकी सिंह, सम्मेलन की उपाध्यक्षा डॉ. मधु वर्मा, डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह तथा आनंद मोहन झा ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर 20 विदुषियों और विद्वानों को 'हिंदी सेवी सम्मान' से विभूषित किया गया। कवि-सम्मेलन के दौरान कई कवियों ने अपनी रचनाओं में हिंदी की काव्य-संपदा का परिचय दिया। मंच-संचालन डॉ. भूपेन्द्र कलसी तथा योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

श्री अनिल सुलभ की रिपोर्ट

पिलानी में हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

12 जनवरी, 2020 को सी.एस.आई.आर.-सीरी (Council for Scientific & Industrial Research), पिलानी में हिंदी दिवस के अवसर पर वैज्ञानिक-प्रशासनिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के स्थानापन्न निदेशक डॉ. पी.के. खन्ना की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला के दौरान संस्थान के साइबर भौतिक प्रणालियाँ, सूक्ष्म तरंग युक्तियाँ व स्मार्ट संवेदक क्षेत्रों के वैज्ञानिकों ने समाज कल्याण के लिए किए गए शोध कार्यों की प्रस्तुतियाँ दीं। अतिथियों ने कार्यशाला की स्मारिका का विमोचन किया। निदेशक डॉ. खन्ना ने संस्थान की विज्ञान पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिक दर्पण 2019' में प्रकाशित लेखों व शोध पत्रों के लेखकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. एस. अली अकबर, डॉ. जे.एल. रहेजा, डॉ. पी.सी. पंचारिया, डॉ. निधि चतुर्वेदी, विनोद कुमार, रमेश बौरा सहित अन्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : दैनिक भास्कर

विश्व हिंदी दिवस 2020 : विश्व भर में

बाली, इंडोनेशिया

10 जनवरी, 2020 को भारत के प्रधान कोंसलावास एवं स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, बाली, इंडोनेशिया के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। भारत के बाली स्थित कोंसलावास के माननीय प्रधान कोंसल श्री प्रकाश चन्द्र ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. ई. मादे तितिब आचार्य वेदानंद रहे, जिन्होंने हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज विश्व में हिंदी को सहजता से स्वीकार किया जाने लगा है। इस अवसर पर आयोजित हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता तथा व्यक्तिगत एवं समूह गायन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही नृत्य प्रस्तुति भी हुई। केंद्र के निदेशक श्री मनोहर पुरी ने हिंदी भाषा के महत्त्व और प्रवासी भारतीय दिवस की उपयोगिता को रेखांकित किया। समारोह में लगभग 125 लोगों ने भाग लिया तथा संचालन श्री संजय कुमार चौधरी ने किया।

श्री मनोहर पुरी की रिपोर्ट

कैलिफ़ोर्निया, अमेरिका

11 जनवरी, 2020 को कैलिफ़ोर्निया, अमेरिका में 'ग्लोबल हिंदी ज्योति' संस्था द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में हाइकु विधा को विदेश में प्रचारित करने के उद्देश्य से बे-एरिया, कैलिफ़ोर्निया के प्रवासियों और हिंदी प्रेमियों व लेखकों के लिए हाइकु कार्यशाला का आयोजन किया गया। हाइकु आज जापानी साहित्य की सीमाओं को लाँघकर विश्व-साहित्य की निधि बनता जा रहा है। इसी को ध्यान में रखकर और इसके प्रति विशेष प्रेम के चलते 'ग्लोबल हिंदी ज्योति' ने इस कार्यशाला का आयोजन किया। समारोह में कई स्थानीय तथा भारतीय लेखकों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर श्रीमती अनिता कपूर तथा श्रीमती विभा श्रीवास्तव ने हाइकु विधा पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला के अंतर्गत उपस्थित लेखकों ने हाइकु-लेखन का प्रयास भी किया।

श्रीमती अनिता कपूर की रिपोर्ट

हैम्बर्ग, जर्मनी

10 जनवरी, 2020 को हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय एवं भारतीय दूतावास, बर्लिन (टैगोर सेंटर, बर्लिन) के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कौंसल जनरल महामहिम श्री मदन लाल रैगर रहे। विशिष्ट अतिथि प्रो. अमृता नारलीकर तथा मुख्य वक्ता डॉ. अरुणा नारलीकर और अर्चना पैन्यूली रहीं। श्री मदन लाल रैगर ने हिंदी भाषा की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर के बारे में अपनी बात रखी और उन्होंने आप्रवासी भारतीयों से अपनी भाषिक एवं सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का आह्वान किया। वाईस कौंसल श्री गुलशन ढींगरा ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया संदेश पढ़कर सुनाया। प्रो. अमृता नारलीकर ने हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के महत्त्व को विश्व में भारत के बढ़ते हुए महत्त्व के संदर्भ में समझाया। डॉ. अरुणा नारलीकर ने हिंदी कविता की परंपरा, विकास एवं समाज में कविता की भूमिका पर विस्तार में अपनी बात रखी। हिंदी साहित्यकार अर्चना पैन्यूली ने यूरोप में लिखे जा रहे हिंदी डायस्पोरा गद्य साहित्य के समसामयिक विकास पर अपने विचार रखे। प्रो. आइजैक्सन ने संस्कृत काव्य में भाषा की परंपरा एवं उसके महत्त्व पर बात करते हुए संस्कृत और हिंदी के संबंध में संक्षिप्त में अपने विचार रखे। कार्यक्रम के दौरान हिंदी कविता, कहानी, निबंध एवं एकांकी, भारतीय संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ हुईं। साथ ही भारतीय आप्रवासी बच्चों द्वारा संस्कृत साहित्य पर आधारित 'मुखौटा' नृत्य और विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएँ, अकादमिक सदस्य तथा आप्रवासी भारतीय समुदाय के सदस्य भारी मात्रा में उपस्थित थे। हैम्बर्ग शहर के अलावा अनेक लोग हनोवर, ब्रेमन, ल्यूनेबुर्ग और ल्यूबेक से आए थे। संचालन डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने किया।

डॉ. राम प्रसाद भट्ट की रिपोर्ट

वारसा, पोलैंड

9 जनवरी, 2020 को भारतीय राजदूतावास वारसा, पोलैंड में भारतीय दूतावास और साउथ

एशियन विभाग, प्राच्य विद्या संकाय के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह में डॉ. बी. एल. गौड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने हिंदी की लगातार बढ़ती माँग और बाज़ार की भाषा होने के कारण इस भाषा को संयुक्त राष्ट्र की दूसरी भाषा बनने पर आशा व्यक्त की।

इस अवसर पर साउथ एशिया विभाग, प्राच्य विद्या संकाय के डीन ने अपने विचार व्यक्त किए। संकाय की प्रो. दानुता स्ताशिक ने हिंदी की आवश्यकता तथा विश्व हिंदी दिवस मनाने के उद्देश्य को विस्तार से समझाया। प्रो. सुधांशु कुमार शुक्ल ने भारतीय संविधान के बारे में बताया। विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ रहे छात्रों ने भाषण, गीत, कविता, नृत्य प्रस्तुतियाँ और नाटिका का मंचन किया। मंच का संचालन प्रो. सुधांशु कुमार शुक्ल ने किया।

प्रो. सुधांशु कुमार शुक्ल की रिपोर्ट

सिंगापुर

सिंगापुर में 'संगम सिंगापुर' संस्था द्वारा भारतीय उच्चायोग सिंगापुर के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय उपउच्चायुक्त श्री निनाद देशपांडे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह में छात्रों ने गीत व नृत्य के साथ ही ऐतिहासिक नाटक 'पन्ना धाय', भारत के संविधान को नाटक रूप में, कठपुतलियों के माध्यम से 'काबुलीवाला' कहानी, लोक गीत, फ़िल्मी गीतों का प्रांतीय बोलियों में रूपांतरण करने के साथ ही हिंदी की भिन्न विधाओं के अन्य कई रूप तथा नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं पारितोषिक दिए गए।

सिंगापुर संगम की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का 12वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस

11 फ़रवरी, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में सचिवालय के सभागार में अपना 12वाँ आधिकारिक कार्यारंभ दिवस मनाया। प्रथम सत्र में कार्यारंभ दिवस समारोह मनाया गया तथा द्वितीय सत्र में *'हिंदी कहानी का अध्ययन एवं विश्लेषण'* विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई। यह कार्यशाला दो दिवसीय रही।

आधिकारिक कार्यारंभ दिवस समारोह

प्रथम सत्र का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम में भारतीय उपउच्चायुक्त श्री जनेश केन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में स्थायी उपसचिव श्री युधिष्ठिर मनबोध तथा कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्रालय की प्रतिनिधि के रूप में प्रमुख संस्कृति अधिकारी श्रीमती अनुपमा चमन उपस्थित थीं। इस वर्ष भोपाल से प्रसिद्ध हिंदी लेखक डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (पद्मश्री सम्मानित) को बीज वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

श्री जनेश केन ने इस अवसर पर सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा *"भाषा और संस्कृति का बहुत गहरा संबंध है। भाषा तो सभ्यता की आत्मा है। और हिंदी भारत की सभ्यता से जुड़ी हुई है। हिंदी तो भारत की अस्मिता है।"* उन्होंने अपने जीवन की घटना सुनाते हुए कहा कि साहित्य जीवन सिखाता है। उन्होंने आगे कहा *"आज दुनिया की 20 प्रतिशत आबादी हिंदी बोलती या समझती है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि इस भाषा का उपयोग करें, इसका संरक्षण करें और जितना ज़्यादा हो सके प्रचार करें व उसमें बात करें। हिंदी बहुत ही सुन्दर भाषा है। इसमें बहुत अच्छा साहित्य लिखा गया है। इसके प्रचार में विश्व हिंदी सचिवालय सराहनीय कार्य कर रहा है।"*

डॉ. ज्ञान चातुर्वेदी ने **'हिंदी की कथा-यात्रा'** विषय पर बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नई रचना के साथ एक नया लेखक पैदा होता है। *"मैं लेखन को जीता रहा हूँ। मुझे एक कविता याद आती है, जिसमें यह भाव है कि पुल पर खड़े होकर आप नदी पर कविता नहीं लिख सकते, उसके लिए आपको नदी में उतरना पड़ता है। जब हम एक कहानी, कविता या साहित्य को देखते हैं, तो एक पुल से उसको देखते हैं, लेकिन उस नदी में उतरकर ही अनुभव हो सकता है, कितना ही खूबसूरत चित्र हो, कहानी हो, कविता हो, पुल पर खड़े होकर कहानी अलग ही होगी, पर नदी में उतरकर महसूस करेंगे, तो कहानी अलग होगी और मैं नदी में उतरने वाला व्यक्ति हूँ। मैं पुल पर खड़े रहकर नदी कैसी है, उसपर बात नहीं कर सकता। और यह एक सृजनात्मक नज़र से देखने के लिए आपको प्रोत्साहित करेगा।"*

श्री युधिष्ठिर मनबोध ने उपप्रधान मंत्री एवं शिक्षा मंत्री का संदेश सुनाया। उन्होंने कहा *"यह सर्वमान्य है कि हिंदी का प्रचार-प्रसार साहित्य द्वारा सम्भव है। यह सच है कि साहित्य समाज का दर्पण है। अगर हम साहित्य का अध्ययन करेंगे तो आसानी से समाज को समझ पाएँगे। कहानी साहित्य की सबसे प्रबल विधा है। इस दिशा में कलम चलाकर प्रेमचंद, गुलेरी, अभिमन्यु अनत जैसे रचनाकार आज अमर हो गए हैं।"* उन्होंने यह भी कहा *"हिंदी कहानी के अध्ययन एवं विश्लेषण पर आधारित कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। एस.सी., एच.एस.सी. तथा तृतीयक स्तर पर हिंदी कहानियाँ निर्धारित हैं। मेरा पूरा विश्वास है कि इस कार्यशाला से कहानियों के अध्ययन एवं विश्लेषण में प्रखरता आएगी। एस.सी., एच.एस.सी. के पाठ्यक्रम में भारतीय कहानियों के साथ-साथ मॉरीशसीय कहानियाँ भी निर्धारित हैं। मेरा आह्वान है कि भारतीय कहानियों के अध्ययन के साथ-साथ स्थानीय कहानियों को भी मान्यता दी जाए।"*

श्रीमती अनुपमा चमन ने कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री माननीय श्री अविनाश तिलक का संदेश सुनाया। उन्होंने कहा कि *"विश्व हिंदी सचिवालय वास्तव में एक मंच के रूप में कार्यरत है, जो हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ उन गतिविधियों का आयोजन करता है जो हिंदी की प्रगति में योगदान देते हैं। 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के प्रस्ताव से लेकर 11 फ़रवरी 2008 को उसके आधिकारिक कार्यारंभ तक और उसके बाद 2015 में आधिकारिक निर्माण कार्यारंभ तथा 2018 में नए भवन के उद्घाटन तक सचिवालय कई उतार-चढ़ाव से गुज़रा है, लेकिन अपने लक्ष्य और उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु आगे बढ़ता रहा। अपने इन 12 वर्षों के दौरान विश्व हिंदी सचिवालय ने अनेक देशों की हिंदी संस्थाओं के साथ जुड़कर हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में सराहनीय प्रयास किए हैं। इसके लिए सचिवालय को मैं बधाई देना चाहूँगी।"*

कार्यक्रम के आरंभ में सचिवालय की कार्यवाहक महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने उपस्थित महानुभावों, गण्यमान्य अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों का स्वागत किया तथा सचिवालय की 12 वर्ष की उपलब्धियों का उल्लेख भी किया।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा 'हिंदी जन की बोली है' गान का रमणीय प्रस्तुतीकरण भी हुआ।

गण्यमान्य अतिथियों के वक्तव्य के बाद डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया। तत्पश्चात् विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक साहित्यिक हिंदी पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' के द्वितीय संस्करण तथा प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी लेखक श्री धनराज शम्भु कृत 'जहाज़ का पंछी' पुस्तक का गण्यमान्य अतिथियों के हाथों लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका आचार्य प्रतिष्ठा, महात्मा गांधी संस्थान की एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं भाषा अध्ययन संकाय की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन, हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री धनराज शम्भु, हिंदी लेखक संघ के प्रधान डॉ. लालदेव अंचराज तथा मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, प्राध्यापक, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन सचिवालय की कार्यवाहक महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

दो दिवसीय कार्यशाला

विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने 12वें आधिकारिक कार्यारंभ दिवस के उपलक्ष्य में 11-12 फ़रवरी, 2020 को मॉरीशस के एच.एस.सी. एवं स्नातक स्तर के हिंदी छात्रों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का मुख्य विषय *'हिंदी कहानी का अध्ययन एवं विश्लेषण'* रहा। कार्यशाला का उद्देश्य था - हिंदी कहानी-पठन संबंधी दृष्टिकोणों की समझ में वृद्धि करना, हिंदी कहानियों का समीक्षात्मक अध्ययन करने के लिए छात्रों को सक्षम बनाना तथा कहानी के विश्लेषण-कौशल को विकसित करना।

कार्यारंभ दिवस समारोह के बीज वक्ता डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कार्यशाला का संचालन किया। प्रथम दिवस की कार्यशाला के अंतर्गत 2 सत्र तथा द्वितीय दिवस के अंतर्गत 3 सत्र आयोजित हुए। कार्यशाला में कहानी के तत्वों पर विस्तार से चर्चा हुई। इसके लिए पाठ्यक्रम में निर्धारित 5 कहानियों - प्रेमचंद लिखित 'नमक का दरोगा', जयशंकर प्रसाद रचित 'पुरस्कार', राजेन्द्र यादव कृत 'कलाकार', मन्नु भण्डारी लिखित 'रानी माँ का चबूतरा' और निर्मल वर्मा रचित 'सुबह की सैर' का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया। इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान में आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पांडेय ने निर्मल वर्मा कृत 'सुबह की सैर' की विस्तृत समीक्षा की।

कार्यशाला को पाँच सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र में *'हिंदी कहानी में कथावस्तु एवं संवाद का अध्ययन तथा विश्लेषण'* तथा तृतीय सत्र में 'हिंदी कहानी में पात्र चरित्र-चित्रण का अध्ययन तथा विश्लेषण' विषय पर कार्यशाला हुई। द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में *'हिंदी कहानी में देशकाल एवं वातावरण का अध्ययन तथा विश्लेषण'*, द्वितीय सत्र में *'हिंदी कहानी में भाषा-शैली का अध्ययन तथा विश्लेषण'* तथा तृतीय सत्र में *'हिंदी कहानी में शीर्षक एवं उद्देश्य का अध्ययन तथा विश्लेषण'* विषयों पर कार्यशाला हुई।

गतिविधियाँ :

- प्रतिभागियों को उद्देश्य एवं शीर्षक से संबंधित प्रश्न लिखने के लिए कहा गया। विषय-विशेषज्ञ ने प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया।
- परिचर्चा-सत्र के अंतर्गत छात्रों ने चयनित कहानियों के पात्रों के चरित्र- चित्रण पर प्रस्तुति की।
- कार्य-सत्र में छात्रों को समीक्षात्मक दृष्टि से कहानियों को परखने और कहानी के विभिन्न भागों को गहराई से समझने में सहायता प्राप्त हुई।

लेखक सम्मेलन

13 फ़रवरी 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय के सम्मेलन कक्ष में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के सान्निध्य में एक लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में मॉरीशस के लगभग 15 वरिष्ठ एवं नवोदित लेखकों ने भाग लिया। सम्मेलन में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने व्यंग्य विधा पर चर्चा की। तत्पश्चात् उपस्थित लेखकों डॉ. राजरानी गोबिन, श्रीमती कल्पना लालजी, श्रीमती अंजु घरभरन, डॉ. सुरीति रघुनन्दन, श्री हीरालाल लीलाधर, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ, श्रीमती सुनीता आर्यनायक, सुश्री चम्पावती बम्मा, श्री धर्मेन्द्र कुमार सिंह, श्री कविराज बाबू, श्रीमती निष्ठा पुणिया-जोयसुरी, सुश्री लक्ष्मी जयपोल तथा श्रीमती अंजलि हजगैबी-बिहारी ने अपनी रचनाओं का वाचन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने भी अपनी व्यंग्य रचना सुनाई।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला / व्याख्यान / जयंती / पुस्तक मेला

वर्धा में 'गांधीजी एवं भारतीय भाषाओं' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

23 जनवरी, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 23 जनवरी को ग़ालिब सभागार में विश्वविद्यालय की कार्य-परिषद् की सदस्य एवं गांधीवादी चिंतक प्रो. कुसुमलता केडिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंच पर प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट, कार्यकारी कुलसचिव क़ादर नवाज़ ख़ान तथा संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी उपस्थित थे। दीप-प्रज्वलन एवं विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ संगोष्ठी प्रारंभ की गई। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं है। हिंदी वास्तविक संदर्भ में विश्वभाषा है। उन्होंने यूरोपीय सभ्यता की विकास दृष्टि, मनुष्य और मशीन केंद्रित सभ्यता, सांस्कृतिक सभ्यता की आज़ादी की लड़ाई, भाषा और लिपियों का अंत:संबंध आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

प्रो. कुसुमलता केडिया ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि गांधीजी की दृष्टि में अध्यात्म, धर्म और सनातन केंद्रीय विचार रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने कहा कि अंग्रेज़ी भाषा हम पर अनावश्यक रूप से थोपी जा रही है। उन्होंने कहा कि गांधीजी के हर विचार अमल में लाना आवश्यक हैं।

स्वागत वक्तव्य प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने दिया। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने विदेश में रहकर भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया और यंग इंडिया, हरिजन तथा नवजीवन आदि समाचार-पत्रों के माध्यम से अपनी बात देश और दुनिया में पहुँचाई। उन्होंने संगोष्ठी के लिए देश भर के महाविद्यालयों और विद्यालयों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मंचासीन अतिथियों का चरखा, अंगवस्त्र एवं सूत माला देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. राकेश मिश्र तथा धन्यवाद-ज्ञापन कार्यकारी कुलसचिव क़ादर नवाज़ ख़ान ने किया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

श्री बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

केरल में द्विदिवसीय संगोष्ठी

9-10 दिसंबर, 2019 को केरल राज्य के एम.इ.एस. कल्लडी कॉलिज के भाषा विभागों ने 'महात्मा : सरहदें पार करते हुए' विषय पर द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन एम.इ.एस. केरल के अध्यक्ष एवं चिंतक डॉ. पी.ए. फसल गफ़ूर ने किया। उन्होंने गांधी जी के जीवनोपरांत के भारत और विश्व पर मूल्यांकन करते हुए अपने उद्घाटन भाषण में गांधी जी और उनके दर्शन के विरोध में उठनेवाले स्वरों को रेखांकित किया।

अरबा मिंच विश्वविद्यालय, इथियोपिया से पधारे डॉ. गोपाल शर्मा ने अपने बीज-भाषण में गांधीजी के दक्षिण अफ़्रीका प्रवास का रोचक प्रस्तुतीकरण दिया और बताया कि महात्मा गांधी का महात्मा बनने तक का जीवन अहिंसा और उसके प्रयोगों का आख्यान है।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. रंजीत एम. ने अपने स्वागत-भाषण में समकालीन समाज में गांधी जी के चिंतन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

पोंडिचेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सी. जयशंकर बाबु, एम.इ.एस. कल्लडी कॉलिज प्रबंधन समिति के सचिव जनाब पी. यु. मुजीब, चेयरमैन के.सी.के. सैद अली, प्राचार्य टी.के. जलील, एम.इ.एस. पाल्काट ज़िला अध्यक्ष जब्बार अली, शाज़िद वलांचेरी, श्रीमती ए. रमला आदि भी शामिल थे। गांधी जी से संबंधित विभिन्न विषयों पर अरबी, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, उर्दू विषयों पर विभिन्न सत्र संपन्न हुए। गांधी जी की फ़िल्मों का प्रदर्शन, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन और पुस्तकालय में गांधी कोर्नर की स्थापना भी की गई।

डॉ. रंजीत एम. की रिपोर्ट

ब्रैम्पटन में हिंदी राइटर्स गिल्ड की मासिक गोष्ठी

8 फ़रवरी, 2020 को हिंदी राइटर्स गिल्ड ने ब्रैम्प्टन की स्प्रिंगडेल शाखा लाइब्रेरी में एक मासिक गोष्ठी का आयोजन किया। कृष्णा वर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमती आशा बर्मन ने बसन्तपञ्चमी के अवसर पर होनेवाली माता सरस्वती के पूजन का उल्लेख किया तथा श्रीमती भुवनेश्वरी पांडे के साथ मिलकर सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की।

इसके उपरान्त श्रीमती आशा बर्मन ने टोरंटो के हिंदी समाज के अत्यंत प्रसिद्ध कवि श्री शिवनंदन सिंह यादव जी के सम्बन्ध में बताया कि 8 जनवरी को उनके निधन से हिंदी जगत ने एक अत्यंत योग्य कवि खो दिया है। उन्होंने उनके सम्बन्ध में एक स्वरचित संस्मरण प्रस्तुत किया। इस संस्मरण में उन्होंने डॉक्टर यादव के साहित्यिक योगदान की चर्चा करते हुए उनके सरल-सहज व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात सभा में उनके सम्मान में 2 मिनट का मौन रखा गया।

इसके उपरान्त दूसरे सत्र में स्वरचित रचनाओं की प्रस्तुति हुई। इस सत्र में हिंदी राइटर्स गिल्ड के सदस्य कवियों आशा बर्मन, कृष्णा वर्मा, काम्बोज जी, सतीश सेठी, बालकृष्ण शर्मा, श्रीमती विजयकांता, नरेंद्र ग्रोवर तथा राज माहेश्वरी ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

श्री काम्बोज ने हिंदी की काव्य-रचना के सम्बन्ध में एक वार्ता प्रस्तुत की। श्रीमती भुवनेश्वरी ने कुछ हाइकु सुनाने के साथ-साथ एक नवयुगल प्रेमी के सम्बन्ध में भी एक कविता सुनाई। श्री सतीश सेठी ने 'दहलीज़' नामक कविता सुनाई। श्री बालकृष्ण शर्मा ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं तथा 'ज्वालामुखी' विषयक एक कविता पढ़ी। श्रीमती विजयकांता ने कबीरदास, सूरदास तथा बिहारी के कुछ प्रसिद्ध दोहे सुनाए। श्री नरेन्द्र ग्रावेर ने 'आशा' से सम्बंधित एक कविता सुनाई। कृष्णा वर्मा ने एक माँ पर एक मार्मिक कविता सुनाई। राज माहेश्वरी ने अपनी कविता में समय के सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त किए। आशा बर्मन ने अपनी एक कविता 'रसोई' सुनाई तथा उससे सम्बंधित एक मनोरंजक कहानी सुनाकर सबका मनोरंजन किया।

श्रीमती आशा बर्मन की रिपोर्ट

मुम्बई में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

17 तथा 18 फ़रवरी, 2020 को ग्रीन टेक्नोलॉजी सभागार, मुम्बई विश्वविद्यालय में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी, भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा *"जयशंकर प्रसाद वर्तमान समय और समस्याओं के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनके द्वारा रचित कामायनी अपने समय की सारी संभावनाओं को सोख लेती है।"* मुम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुहास पेडणेकर ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा *"हम जयशंकर प्रसाद के पुनर्पाठ द्वारा नई पीढ़ी को राष्ट्रप्रेम तथा विश्व मनुष्यता का संदेश दे सकते हैं।"* कार्यक्रम के आरम्भ में हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने महाकवि जयशंकर प्रसाद को 20वीं सदी की सबसे बड़ी साहित्यिक प्रतिभा बतलाया। प्रख्यात लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल ने कहा कि जयशंकर प्रसाद ने अपने उपन्यासों, कहानियों तथा अन्य रचनाओं में ऐसे सुदृढ तथा वैविध्यपूर्ण नारी चरित्र रचे हैं कि पश्चिम और हमारे देश के स्त्री-विमर्श के रचनाकार भी नहीं रच सके हैं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. अवधेश प्रधान तथा महाकवि जयशंकर प्रसाद के प्रपौत्र श्री विजय शंकर प्रसाद ने भी अपने उद्गार सुनाए। उद्घाटन-सत्र का संचालन डॉ. विनीता सहाय ने किया।

इसके उपरांत डॉ. अशोक प्रियदर्शनी की अध्यक्षता में प्रथम सत्र - 'प्रसाद का कामायनी पूर्व काव्य : पुनर्पाठ के आयाम' तथा डॉ. रामजी तिवारी की अध्यक्षता में द्वितीय सत्र - 'कामायनी : पुनर्पाठ के आयाम' संपन्न हुआ। अगले दिन डॉ. सदानंद शाही की अध्यक्षता में तृतीय सत्र - 'प्रसाद के नाटक पुनर्पाठ के आयाम', डॉ. योजना रावत की अध्यक्षता में चतुर्थ सत्र - 'प्रसाद का कथा-साहिय : पुनर्पाठ के आयाम' तथा डॉ. रामकिशोर शर्मा की अध्यक्षता में पंचम सत्र - 'प्रसाद का चिंतन : पुनर्पाठ के आयाम' संपन्न हुआ।

समापन-सत्र श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. विनोद टीबड़ेवाला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. बनमाली चतुर्वेदी, विजय शंकर प्रसाद तथा अतुल कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. सुनील वल्वी ने संचालन तथा डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। इस संगोष्ठी में लगभग ढाई सौ विद्वान और छात्र सम्मिलित हुए।

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की रिपोर्ट

फ़िजी (सूवा) में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

25 जनवरी, 2020 को फ़िजी की राजधानी सूवा के 'ग्रैंड पैसेफ़िक होटल' में भारतीय उच्चायोग सूवा, शिक्षा मंत्रालय फ़िजी एवं विरासत और कला मंत्रालय फ़िजी द्वारा एक दिवसीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। यह सम्मेलन न केवल फ़िजी बल्कि पूरे प्रशांत क्षेत्र का पहला हिंदी सम्मेलन था। इस वर्ष फ़िजी अपनी स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाँठ मना रहा था, अत: सम्मेलन के आयोजन के लिए यह एक शुभ वर्ष रहा।

सम्मेलन में फ़िजी की भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्रीमती पद्मजा ने स्वागत उद्‌बोधन दिया। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले विशिष्ट अतिथियों में प्रधान मंत्री कार्यालय, फ़िजी गणराज्य में स्थायी सचिव श्री योगेश करण, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली के महानिदेशक श्री अखिलेश मिश्र, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र, भारतीय विदेश मंत्रालय, दिल्ली में हिंदी के द्वितीय सचिव श्री हरकेश मीणा, फ़िजी की सहायक स्वास्थ्य मंत्री सुश्री वीणा भटनागर आदि थे। साथ ही फ़िजी से स्वामी संयुक्तानंद जी, फ़िजी के तीनों विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति व कुलपति तथा फ़िजी की पाठशालाओं से 150 से भी अधिक शिक्षक उपस्थित थे।

इस सम्मेलन में अनेक अंतरराष्ट्रीय वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी से प्रो. पीटर फ़्रीडलैंडर, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर से डॉ. संध्या सिंह, ऑस्ट्रेलिया से डॉ. मृदुल कीर्ति, होंगकोंग से डॉ. प्रियंका जैन और न्यूज़ीलैंड से श्रीमती सुनीता नारायण।

सम्मेलन को पाँच सत्रों में बाँटा गया था, जिनके विषय थे - 'फ़िजी में हिंदी', 'फ़िजी में हिंदी शिक्षण', 'प्रशांत में हिंदी साहित्य', 'युवा और हिंदी' तथा 'हिंदी और प्रौद्योगिकी' ।

सभी विषयों पर प्रस्तुत व्याख्यान शोधपरक थे और सूवा उच्चायोग व विदेश मंत्रालय, भारत द्वारा उनका संकलन किया जा रहा है, ताकि उचित दिशा में प्रयोग हो सके। युवाओं में हिंदी की रुचि को जगाने और बरकरार रखने पर विशेष बल दिया गया। फ़िजी में भी हिंदी के प्रति रुचि कम होती जा रही है, जबकि हिंदी फ़िजी की तीन राजकीय भाषाओं में से एक है। हिंदी ने यहाँ सभी भारतवंशियों को अपनी पूर्व प्रांतीयता को भूलकर एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया है। यहाँ इस तरह के सम्मेलन की उपयोगिता शिक्षकों के उत्साह को देखकर साफ़ नज़र आई।

सम्मेलन के बाद भारत का 71वाँ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया, जिसमें महामहिम राष्ट्रपति मेजर-जनरल (सेवानिवृत) जियोजी कोनरोते

के साथ फ़िजी में न्यूज़ीलैंड उच्चायुक्त महामहिम जोनाथन कर व अन्य मंत्री और राजनयिक उपस्थित थे।

डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट

पटना में कविवर विशुद्धानंद जयंती एवं कवि-सम्मेलन

14 जनवरी, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा कविवर विशुद्धानंद जयंती एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि कविवर विशुद्धानंद करुणा, प्रेम और श्रद्धा भाव के यशस्वी कवि थे। एक दिव्य शांति और आनंद का भाव उनके मुखारविंद पर सदैव बना रहता था। उनकी सारस्वत प्रतिभा से हिंदी गीत-संसार को बहुत कुछ मिलने वाला था, किंतु काल ने उन्हें हम से असमय ही छीन लिया। विशुद्धानंद जी एक प्रतिभाशाली गीतकार, पटकथा लेखक, रेडियो-रूपककार ही नहीं एक विनम्र साहित्य-सेवी और आध्यात्मिक-साधना के पथिक थे। इस अवसर पर उनके गीतों के ध्वन्यांकित संकलन का लोकार्पण भी किया गया।

सम्मेलन के प्रधानमंत्री और सुप्रसिद्ध समालोचक डॉ. शिववंश पांडेय ने स्वागत-भाषण दिया।

इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन का आरंभ, विशुद्धानंद जी के पुत्र प्रणव ने उनकी एक वंदना गीत से किया। उनके बहुचर्चित गीत 'पंछी रे ! पर तोल के तू मत रह जाना, आगे सफ़र सुहाना होगा शर्तिया' तथा 'आमों के संग बौराने के दिन, भौरों के संग गुनगुनाने के दिन' का भी श्री प्रणव ने सस्वर पाठ किया।

डॉ. शंकर प्रसाद, आर.पी. घायल, डॉ. मधु वर्मा, कुमार अनुपम तथा व्यंग्य के कवि ओम प्रकाश पाण्डेय ने अपनी कविताओं का पाठ किया और गीत के लोकप्रिय कवि आचार्य विजय गुंजन ने मधुर स्वर से एक गीत सुनाया। उपस्थित कवियों और कवयित्रियों ने भी अपनी रचनाओं से कवि को अपनी भावांजलि प्रदान की। मंच का संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

आभार : डॉ. अनिल सुलभ, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन

पटना में भव्य कवि-सम्मेलन

2 जनवरी, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन ने नए वर्ष के स्वागत में गीत-ग़ज़लों का यादगार आयोजन किया। अखिल भारतीय गीत-ग़ज़ल मंच की ओर से सम्मेलन सभागार में अमेरिका में रह रहे आप्रवासी भारतीय कवि प्रमोद राजपूत के काव्य-संग्रह 'आ जी ले ज़रा' के लोकार्पण के अवसर पर इस भव्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। अंतरराष्ट्रीय काव्य-मंचों के अनेक दिग्गज कवियों-शायरों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

समारोह का उद्घाटन बिहार के सहकारिता मंत्री राणा रणधीर ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद रामनाथ ठाकुर उपस्थित थे। मंच और सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ की अध्यक्षता और मंच के महासचिव आनंद किशोर मिश्र के संचालन में आयोजित इस कवि-सम्मेलन का आरंभ आरुषि की वाणी-वंदना से हुआ।

गीत के अत्यंत लोकप्रिय कवि डॉ. सोम ठाकुर, विख्यात कवि 'वाहिद अली 'वाहिद', अमेरिका से आए शायर डॉ. नूर अमरोहवी, भोपाल से आए मशहूर शायर डॉ. अंजुम बाराबंकवी तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों के चर्चित कवि प्रमोद राजपूत ने गीत-प्रस्तुति की। आगरा से आए वरिष्ठ कवि डॉ. राज कुमार रंजन, भारतीय पुलिस सेवा के पूर्व अधिकारी और कवि अनिल कुमार सिंह, सम्मेलन के उपाध्यक्ष मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', डॉ. शंकर प्रसाद, सुनील कुमार दूबे, आराधना प्रसाद, रमेश कंवल, ज़ीनत शेख़, कवि घनश्याम, कालिन्दी त्रिवेदी, डॉ. मधु वर्मा और डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह ने भी अपनी रचनाओं से श्रोताओं को प्रभावित किया।

इस अवसर पर डॉ. शालिनी पाण्डेय, राज कुमार प्रेमी, पूनम सिन्हा श्रेयसी, डॉ. सुधा सिन्हा, डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, डॉ. सुलक्ष्मी कुमारी, डॉ. मीना कुमारी, डॉ. बी. एन. विश्वकर्मा, संजू शरण और श्रीकांत सत्यदर्शी समेत सैकड़ों की संख्या में कवि एवं काव्य-रसिक उपस्थित थे। योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

बैंगलोर में एक दिवसीय राष्ट्रीय शिक्षक उन्नयन कार्यशाला संपन्न

29 जनवरी, 2020 को बिशप कॉटन वीमेन्स क्रिश्चियन कॉलिज, बैंगलोर की ओर से एक दिवसीय राष्ट्रीय शिक्षक उन्नयन कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के लगभग 75 हिंदी शिक्षक-शिक्षिकाओं और छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर बेंगलुरु केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं बेंगलुरु विश्वविद्यालय के बी.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर की पाठ्यपुस्तक 'काव्य मधुवन' एवं 'काव्य निर्झर' की कविताओं व उनके कवियों पर विशेषज्ञों के साथ चर्चा की गई।

कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद के परामर्शी प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने किया। उन्होंने दोनों कार्यसत्रों की अध्यक्षता भी की। प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने सभी आमंत्रित जनों के प्रति अपने स्नेह को प्रदर्शित करते हुए सभी को शुभकामनाएँ दीं व सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम के विषय पर वार्ता के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कविता की ताकत को सभी भिन्नताओं व कुंठाओं के तालों को खोलने की चाबी बताया व इसे व्यक्तित्व के विकास की संभावनाओं का हिस्सा बताया। हिंदी कविता के शिक्षण के क्षेत्र में इस प्रकार के कार्यक्रमों से छात्रों व अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए मुख्य अतिथि ने ऐसे कार्यक्रमों के बार-बार होने की आवश्यकता पर बल दिया।

बिशप कॉटन वीमेन्स क्रिश्चियन कॉलिज की प्रधानाचार्या प्रोफ़ेसर एस्थर प्रसन्नकुमार व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विनय कुमार यादव ने भी कविता-शिक्षण की आवश्यकता और पेचीदगियों पर सूक्ष्म चर्चा की। दो कार्यसत्रों के दौरान डॉ. रेणु शुक्ल, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ. कोयल बिस्वास, डॉ. ज्ञान चंद मर्मज्ञ, डॉ. राजेश्वरी वी.एम., डॉ. जी. नीरजा तथा डॉ. एम. गीताश्री ने बतौर विषय विशेषज्ञ निर्धारित कविताओं की बारीकियों पर विस्तार से चर्चा की।

प्रथम सत्र में श्री हरिवंशराय बच्चन की कविता - 'जुगनू', जगदीश गुप्त की कविता - 'सच हम नहीं, सच तुम नहीं', नागार्जुन की कविता - 'कालिदास सच सच बतलाना', अटल बिहारी वाजपेयी की कविता - 'मन का संतोष' और जयशंकर प्रसाद की कविता - 'अशोक की चिंता' पर चर्चा व वार्ता की गई। द्वितीय सत्र कवि गोपाल दास नीरज की कविता - 'स्वप्न झरे फूल से, गीत चुभे शूल से' और रामधारी सिंह दिनकर की कविता - 'पुरुरवा और उर्वशी' पर केंद्रित रहा।

प्रतिभागियों ने बताया कि कार्यशाला छात्रों व अध्यापकों के लिए बहुत ज्ञानवर्धक रही। कार्यक्रम की सफल प्रस्तुति का समापन राष्ट्रगान से हुआ ।

डॉ. विनय कुमार यादव की रिपोर्ट

जापान के हिंदी विद्वान तोमियो मिज़ोकामी का भोपाल में व्याख्यान

13 जनवरी, 2020 को मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा हिंदी भवन भोपाल में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'भारत-जापान सांस्कृतिक एवं आर्थिक' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. तोमियो मिज़ोकामी उपस्थित थे।

डॉ. तोमियो मिज़ोकामी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत-जापान के सम्बन्ध न केवल ऐतिहासिक है, अपितु दोनों देशों को सांस्कृतिक कारणों से इन सम्बन्धों को स्थायी स्वरूप प्राप्त हुआ है। बौद्ध धर्म के रूप में जापान को जो दर्शन और जीवन-शैली भारत से मिली, उससे हमारे देश को एक नई दिशा प्राप्त हुई।

प्रारम्भ में हिंदी भवन के निदेशक डॉ. जवाहर कर्णावट ने डॉ. तोमियो मिज़ोकामी का परिचय विस्तार से दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर सुदृढ़ करने का यह सही समय है। जापान में भारत के इंजीनियरों की माँग बहुत अधिक है। विश्व के देशों से जैसे-जैसे व्यापारिक संबंध बढ़ेंगे, हमारी भाषाओं का प्रचार भी बढ़ेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुखदेवप्रसाद दुबे ने की। स्वागत-वक्तव्य श्री युगेश शर्मा ने प्रस्तुत किया। अंत में श्रीमती कान्ता रॉय ने आभार प्रकट किया। इस कार्यक्रम में समिति के मंत्री संचालक श्री कैलाशचन्द्र पन्त, पद्मश्री रमेशचंद्र शाह, श्री रमेश दवे, श्री बटुक चतुर्वेदी, डॉ. रंजना अरगड़े सहित बड़ी संख्या में लेखक एवं साहित्यकार उपस्थित रहे।

श्रीमती कान्ता रॉय की रिपोर्ट

वर्धा में 'संचारक के रूप में कबीर' विषय पर व्याख्यान

24 फ़रवरी, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग में 'संचारक के रूप में कबीर' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। विषय-विशेषज्ञ के रूप में कबीर की रचनाओं के अध्येता एवं गायक डॉ. गजेंद्र कुमार पाण्डेय उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि कबीरदास समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों का न केवल विरोध करते थे, बल्कि जनमानस तक अपनी बात भी पहुँचाते थे। कबीर प्रतीकों के माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था पर चोट करते थे। उनके कुशल प्रचार का सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि उन्होंने सभी वर्ग के लोगों को प्रभावित किया। कबीर को गांधी से जोड़ते हुए उन्होंने बताया कि कबीर और गांधी दोनों ही सत्य और अहिंसा की बात करते हैं। डॉ. पाण्डेय ने कबीर की विभिन्न रचनाओं का गायन भी किया।

यह कार्यक्रम 'रचना समय' के अंतर्गत आयोजित किया गया। 'रचना समय' जनसंचार विभाग का प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित होने वाला कार्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। कार्यक्रम का संचालन 'रचना समय' की संयोजक पी.एच.डी. शोधार्थिनी गरिमा राय और एम.ए. की विद्यार्थिनी पूजा पाठक ने किया।

इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. कृपाशंकर चौबे, सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. धरवेश कठेरिया, डॉ. अख्तर आलम, डॉ. रेणु सिंह, राजेश लेहकपुरे के साथ विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

पूजा पाठक की रिपोर्ट

केंद्रीय हिंदी निदेशालय का हीरक जयंती समारोह

1 मार्च, 2020 को विज्ञान भवन सभागार में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा निदेशालय की स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हीरक जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। निदेशालय के

निदेशक प्रो. अवनीश कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए निदेशालय की वर्तमान और भावी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। माननीय मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में निदेशालय की उपलब्धियों को अंकित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति डॉ. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। मुम्बई विश्वविद्यालय से प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, हैदराबाद से प्रो. आर. एस. सर्राजु और केरल से प्रो. तंकमणि अम्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने प्रभावपूर्ण वक्तव्य में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की योजनाओं की महत्ता और उनकी गुणवत्ता पर सारगर्भित वक्तव्य दिए।

उद्घाटन-सत्र के पश्चात् छंदम कला केंद्र, नई दिल्ली के कलाकारों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् वरिष्ठ साहित्यकार-कवि बालस्वरूप राही की अध्यक्षता में भव्य काव्य-गोष्ठी सम्पन्न हुई, जिसका कुशल संचालन उद्भव साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष और प्रसिद्ध कवि श्री विवेक गौतम ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कवि बी.एल. गौड़, कविता की विभिन्न शैलियों में काव्य-पाठ करने वाले वरिष्ठ कवि लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, वरिष्ठ ग़ज़लकार विज्ञान व्रत, वरिष्ठ कवि-दोहाकार नरेश शांडिल्य, अंतरराष्ट्रीय पत्रिका आधुनिक साहित्य के संपादक और विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. आशीष कंधवे, हास्य-व्यंग्य के श्रेष्ठ रचनाकार संजय जैन और ग़ज़लकार नमिता राकेश ने अपनी शानदार काव्य-प्रस्तुतियाँ कीं। पद्मश्री श्याम सिंह शशि, मेरठ से प्रो. नवीनचंद्र लोहनी, इलाहाबाद से एस. गोविन्दराजन, आगरा से प्रो. उमापति दीक्षित, प्रो. ओम विकास, श्री सुधाकर पाठक तथा देश के विभिन्न भागों से आये हिंदी तथा हिंदीतर विद्वानों ने कार्यक्रम में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की।

डॉ. दीपक पाण्डेय की रिपोर्ट

पटना में डॉ. शैलेंद्र नाथ श्रीवास्तव जयंती-समारोह और संगोष्ठी

24 मार्च, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. शैलेंद्र नाथ श्रीवास्तव जयंती-समारोह और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने समारोह और संगोष्ठी की अध्यक्षता की। डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि शैलेंद्र जी यह मानते थे कि देश की राजनीति को शुद्ध किए बिना कुछ भी अच्छा नहीं किया जा सकता है। सार्वजनिक-सेवा के सभी पदों पर गुणी और विवेक-संपन्न व्यक्तियों का चयन होना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि शैलेंद्र जी ने अनेक प्रकार की व्यस्तताओं के बीच भी लेखन के लिए समय निकाला और अपनी दर्जन भर प्रकाशित पुस्तकों से हिंदी का भंडार भरा। वे एक अधिकारी निबंधकार, कवि और जीवनीकार थे। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु' की जयंती पर राजभाषा-संगोष्ठी तथा लघुकथा गोष्ठी

18 जनवरी, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु' की जयंती पर राजभाषा-संगोष्ठी तथा लघुकथा गोष्ठी का आयोजन किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा हिंदी भाषा के उन्नयन में भारत के जिन महानुभावों ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया, उनमें एक अत्यंत आदरणीय नाम डॉ. लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु' जी का है, जो बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे और बिहार विधान सभा के भी अध्यक्ष रहे। आरंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए, सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने कहा कि सुधांशु जी बड़े कथाकार, कवि, समालोचक, पत्रकार और प्रतिष्ठित राजनेता थे। इस अवसर पर आयोजित लघुकथा-गोष्ठी में उपस्थित विद्वानों ने अपनी लघुकथा का पाठ किया। मंच का संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला 2020

8 जनवरी, 2020 को नई दिल्ली के प्रगति मैदान में चल रहे विश्व पुस्तक मेले में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों और पत्रिकाओं का स्टॉल लगाया गया था। महात्मा गांधी जी के 150वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 'गांधी जी : लेखकों के लेखक' मेले का मुख्य विषय रखा गया था। इस अवसर पर गांधी जी पर परिसंवाद, चर्चाएँ, नाटक, प्रश्नोत्तरी के साथ अन्य कार्यक्रम आयोजित हुए। गांधी जी पर आधारित फ़िल्में व डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई और दुर्लभ चित्रों की प्रदर्शनी भी हुई। मेले में दुनिया भर की अनेक भाषाओं की किताबें पाठकों के लिए उपलब्ध कराई गई थी।। इस ज्ञान कुंभ में साहित्यकारों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को लाखों पुस्तकें देखने-खरीदने का अवसर मिला।

नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला 4 जनवरी से 12 जनवरी तक चला। इसमें देश-विदेश के पुस्तक प्रकाशक सम्मिलित थे। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से आयोजित भव्य मेले में गांधी साहित्य से संबंधित अनेक पुस्तकों को रखा गया था, जो इस मेले का मुख्य आकर्षण रहे। विश्वविद्यालय की ओर से भी 'मेरी कहानी', गांधी की कहानी गांधी की ज़ुबानी', 'गांधी दृष्टि', 'गांधी चेतना', 'गांधी-दर्शन सामाजिक संदर्भ' आदि पुस्तकों को पाठकों के लिए उपलब्ध कराया गया था। इसके अलावा हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं छवि संग्रह, पत्रिकाओं में 'बहुवचन', 'पुस्तक वार्ता' और 'एनल्स आफ़ हिंदी स्टडीज़' को स्टॉल में प्रदर्शित किया गया था।

आभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

लोकार्पण

भोपाल में 'मेरे सपनों का भारत' का लोकार्पण

13 मार्च, 2020 को बाल शोध केन्द्र, भोपाल में सन्दर्भ प्रकाशन द्वारा सुश्री आद्या भारती के बाल कविता-संग्रह 'मेरे सपनों का भारत' का लोकार्पण संपन्न हुआ। समारोह में केन्द्रीय अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलाधिपति डॉ. प्रकाश बरतूनिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा विशेष अतिथि श्री महेश सक्सेना रहे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व निदेशक निराला सृजनपीठ डॉ. देवेन्द्र दीपक ने कहा कि आद्या की रचनाओं में व्यष्टि का समष्टि के प्रति दायित्व की व्याख्या करती कविताएँ हैं। साथ ही अरविन्द शर्मा ने पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि उनका यह प्रयोग इस संग्रह के शीर्षक नाम 'मेरे सपनों का भारत' कविता में दिखता है। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कवयित्री अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री' ने किया तथा आभार-ज्ञापन राकेश सिंह ने किया।

साभार : फ़ाइनल टाइम्स न्यूज़

दिल्ली में 'लम्हों का सफ़र' कविता-संग्रह का लोकार्पण

7 जनवरी, 2020 को विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली में डॉ. जेन्नी शबनम कृत 'लम्हों का सफ़र' कविता-संग्रह का लोकार्पण संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण राजधानी कॉलिज में हिंदी प्रोफ़ेसर डॉ. राजीव रंजन गिरि के हाथों हुआ।

इस अवसर पर डॉ. जेन्नी शबनम ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

डॉ. जेन्नी शबनम की रिपोर्ट

बीकानेर में 'युग युगीन नारी' पुस्तक का विमोचन

31 जनवरी, 2020 को महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के महर्षि वशिष्ठ भवन में सेंटर फ़ॉर वीमेंस स्टडीज़ और

राजस्थानी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. मेघना शर्मा द्वारा संपादित 'युग युगीन नारी' पुस्तक का विमोचन किया गया। विमोचन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. भगीरथ सिंह और मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दिल्ली विश्वविद्यालय की शिक्षाविद डॉ. चयनिका उनियाल पंडा के हाथों संपन्न हुआ। डॉ. पंडा ने कहा कि पूर्व काल के मुकाबले वर्तमान समय में शिक्षा को लेकर परिदृश्य बदला है और महिलाएँ हर क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही हैं। डॉ. मेघना शर्मा ने पुस्तक की रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक इतिहास, साहित्य व संस्कृति से स्त्री-विमर्श के विभिन्न आयामों को समेटे हुई है।

साभार : समाचार सेवा.इन

भोपाल में 'हस्ताक्षर हैं पिता' कविता-संग्रह का लोकार्पण

जनवरी, 2020 में भोपाल के स्वराज भवन में डॉ. लता अग्रवाल कृत पिता पर 1111 कविताओं का संग्रह 'हस्ताक्षर हैं पिता' का लोकार्पण किया गया। इसमें पिता को केंद्रित करके विभिन्न कोणों से कविताएँ रची गई हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात समालोचक लक्ष्मी नारायण पयोधि रहे तथा अध्यक्षता श्री रमेश शाह ने की। श्री लक्ष्मीनाथ पयोधि ने कहा कि पिता पर अब तक इतना बड़ा संग्रह देखने में नहीं आया। अगर यह सर्ग में विभाजित होता, तो प्रबंध काव्य के रूप में सामने आता। डॉ. जवाहर कर्णावट ने इस संग्रह को बेटी द्वारा पिता को सबसे उत्तम श्रद्धांजलि बताया। कार्यक्रम का संचालन हेमन्त कपूर ने किया तथा आभार-प्रदर्शन डॉ. लता अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में भोपाल के सभी गणमान्य साहित्यकार, पत्रकार व समाजसेवी उपस्थित रहे।

डॉ. जवाहर कर्णावट की रिपोर्ट

वाराणसी में 'आज की मधुशाला' काव्य-पुस्तिका का लोकार्पण

6 जनवरी, 2020 को वाराणसी स्थित न्यू अशोक विहार कॉलोनी, शिवपुर के शिविर

सभागार में 'उद्गार' संस्था और 'स्याही प्रकाशन' के संयुक्त तत्वावधान में 'उद्गार' संस्था की 43वीं काव्य-गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती शिब्बी ममगाईं की काव्य-पुस्तिका 'आज की मधुशाला' का लोकार्पण किया गया। यह संग्रह कवि हरिवंशराय बच्चन की 'मधुशाला' से प्रेरित है। इस अवसर पर लगभग 35 कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन योगेंद्र नारायण चतुर्वेदी वियोगी ने किया तथा श्री छतिश द्विवेदी 'कुंठित' ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। समारोह में कई साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

साभार : देशांतर टुडे.कॉम

परिसंवाद, पुस्तक-लोकार्पण तथा काव्य-संध्या

5 जनवरी, 2020 को आर्य समाज, मुंबई के सभागृह में वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान (रजि) के तत्वावधान में परिसंवाद, काव्यसंध्या तथा पुस्तक विमोचन समारोह संपन्न हुआ। प्रथम सत्र में आर.के. पब्लिकेशन मुम्बई से प्रकाशित 'हिंदी के श्रेष्ठ बाल नाटक' और नारायण प्रकाशन वाराणसी से प्रकाशित 'तुम जलाना दीप बाती' पुस्तकों का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे तथा विशिष्ट अतिथि लर्नर्स अकादमी, बांद्रा-पश्चिम मुंबई के प्राचार्य रामनयन दुबे रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुधाकर मिश्र ने की। प्रथम सत्र के लेखकीय वक्तव्य में डॉ. जितेन्द्र पाण्डेय, अस्लम मुलानी और डॉ. पूजा हेमकुमार अलापुरिया ने पुस्तक की विशेषता पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र में परिसंवाद 'समाज का आदि संविधान : मनुस्मृति' विषय पर व्याख्यान व वक्तव्य हुआ। तृतीय सत्र में काव्य-संध्या का आयोजन किया गया।

साभार : हमारा पूर्वांचल.कॉम

वाराणसी में 'शब्दों का सफ़र' काव्य कृति का विमोचन

फ़रवरी, 2020 में वाराणसी के तिरुपति इनक्लेव डुपलेक्स में श्रीमती रजनी अजीत सिंह की काव्य कृति 'शब्दों का सफ़र' का विमोचन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. राम वचन सिंह रहे। डॉ. रामसुधार ने 'शब्दों का सफ़र' पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि कविताओं में कवयित्री ने भावनाओं के कई रंग बिखेरे हैं। मंच का संचालन आशुतोष तिवारी ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन रजनी अजीत सिंह ने किया।

साभार : रजनी की रचनाएँ. वर्डप्रेस.कॉम

पटना में 'छूना है आकाश' काव्य-संग्रह का लोकार्पण

15 फ़रवरी, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में वरिष्ठ कवि प्रणय कुमार सिन्हा के काव्य-संग्रह 'छूना है आकाश' का लोकार्पण संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि कवि प्रणय की रचनाओं में शाश्वत-प्रेम और छंद के प्रति गहरा आग्रह दिखाई देता है। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए, बिहार राज्य हिंदी प्रगति समिति के अध्यक्ष और 'बिहार-गीत' के रचनाकार श्री सत्यनारायण ने कहा कि कविता मनुष्यता की मातृ-भाषा होती है। वरिष्ठ कवि और मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग में विशेष सचिव डॉ. उपेन्द्र नाथ पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार जियालाल आर्य, डॉ. अशोक प्रियदर्शी, प्रो. वासुकीनाथ झा, श्यामजी सहाय तथा रमेश कँवल ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के दौरान श्री प्रणय कुमार सिन्हा ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस अवसर पर कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। मंच का संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्णरंजन सिंह ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

सम्मान / पुरस्कार

'हिंदीभाषा डॉट कॉम' द्वारा सम्मान समारोह

2 मार्च, 2020 को इंदौर में वेब पोर्टल 'हिंदीभाषा डॉट कॉम' के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी भाषा के उत्थान में सहयोगी कलमकारों हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में रचनाशिल्पी सर्वश्री बाबूलाल शर्मा 'बोहरा', संदीप 'सृजन', मनोरमा जोशी, प्रो. शरद नारायण खरे तथा इदरिस खत्री को सतत उत्कृष्ट लेखन हेतु 'हिंदीशिल्पी-2019' से विभूषित किया गया तथा सतत लोकप्रिय रचनाशिल्प हेतु राजू महतो को सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित पत्रिका 'मीडिया विमर्श' के सम्पादक, अध्यक्ष-मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति और माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव प्रो. द्विवेदी रहे तथा विश्वविद्यालय, इन्दौर की कुलपति देवी अहिल्या विशिष्ट अतिथि रहीं। पूर्व कुलसचिव प्रो. संजय द्विवेदी ने पत्रकारिता जनसंचार अध्ययनशाला (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर) में विद्यार्थियों और कलमकारों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी भाषा का ज्ञान होना एक भारतीय की ताकत है। प्रभारी कुलपति डॉ. मिश्र ने हिंदी की प्रासंगिकता को नागार्जुन की कविता में पिरोते हुए श्रोताओं को हिंदी की सुंदरता से परिचित कराया और विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। डॉ. नरगुंदे ने आभार-ज्ञापन किया।

साभार : हिंदी भाषा.कॉम

हिंदी साहित्य अधिवेशन व सम्मान समारोह

29 जनवरी, 2020 को मारवाडी पंचायत वाडी, मुंबई में पूर्वांचल मानस मंडल के तत्वावधान में वसंत पंचमी के अवसर पर हिंदी साहित्य अधिवेशन व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। साहित्य अधिवेशन के मुख्य अतिथि साहित्यकार श्रीमती मंजुबेन लोढ़ा रही। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुधाकर मिश्र, महानगर के वरिष्ठ साहित्यकार भुवनेंद्र सिंह बिश्ट तथा 'काव्यकुंज साहित्यिक संस्था' को अनवरत साहित्य सेवा के लिए 'साहित्य साधना सम्मान 2020' से अलंकृत किया गया। समारोह के दौरान कई साहित्य प्रेमियों ने काव्य-पाठ भी किया।

साभार : हमारा पूर्वांचल.कॉम

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान समारोह

31 जनवरी, 2020 को एन.सी.यू.आई. सभागार, नई दिल्ली में श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। साहित्य की दुनिया में लगातार सक्रिय रहनेवाले वरिष्ठ कथाकार

श्री महेश कटारे को सुविख्यात साहित्यकार डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के हाथों वर्ष 2019 का 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि एवं सम्मान चयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि कटारे जी की कृतियों में प्रेमचंद और रेणु की छाप है और आपकी रचनाओं में संस्कृत की परंपरा के साथ देशज चिंतन का संश्लेष विलक्षण है।

साभार : लाइव हिन्दुस्तान.कॉम

नाटककार श्री राजेश कुमार को अकादमी पुरस्कार

13 फ़रवरी, 2020 को संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षाग्रह, लखनऊ में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक

अकादमी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में वर्ष 2009 से 2019 तक दिए जाने वाले 128 कलाकारों का सम्मान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल आनंदी बेन पटेल रहे। संगीत नाटक अकादमी का यह पुरस्कार कला के विभिन्न क्षेत्रों जैसे संगीत, नृत्य, गायन, नाटक व कला उन्नयन में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जाता है। नाट्य लेखन के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान के लिए वर्ष 2014 हेतु श्री राजेश कुमार को सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार के संबंध में नाटककार श्री राजेश कुमार ने कहा कि यह सम्मान हाशिये के समाज का पक्षधर होने के नाते प्राप्त हुआ है।

साभार : मीडियामोरचा.कॉम

राजस्थान में 'श्री भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति बाल साहित्य भूषण' सम्मान

6-8 जनवरी, 2020 को श्रीनाथद्वारा, राजस्थान में साहित्य मंडल द्वारा आयोजित 'स्वर्गीय श्री भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति बाल साहित्य सम्मान' समारोह में लखनऊ के प्रसिद्ध साहित्यकार लायक राम 'मानव' को 'श्री भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति बाल साहित्य भूषण' सम्मान से सम्मानित किया

गया। इससे पूर्व श्री मानव को कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। जनोपयोगी साहित्य सृजन में निरत श्री मानव संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सीनियर फ़ेलोशिप अध्येता के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं।

साभार : इमेजवॉच ब्यूरो का वेबसाइट

साहित्यकार सम्मान समारोह

24 जनवरी, 2020 को उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ द्वारा भारतेंदु नाट्य अकादमी के सभागार में 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर 'हिंदी साहित्य के संवर्धन में उत्तर प्रदेश के हिंदी साहित्यकारों का प्रदेय' विषयक संगोष्ठी, साहित्यकार सम्मान समारोह एवं पुस्तक विमोचन का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि

उच्च शिक्षा राज्य मंत्री माननीया नीलिमा कटियार रही, जिन्होंने कहा कि भाषा का मतलब सम्प्रेषण, सम्प्रेषण का मतलब सामूहिकता और इसी सामूहिकता की प्रगति के प्रति भाषा संस्थान कटिबद्ध है, जो बहुत संतोषजनक है।

समारोह में उत्तर प्रदेश एवं साहित्य के क्षेत्र में साहित्यिक विनिमय, सौहार्द, समृद्धि और समन्वय को सम्पुष्ट करने के लिए प्रो. त्रिलोक चन्द्र गोयल, डॉ. प्रणव शर्मा शास्त्री, डॉ. अनिल सिंह गहलौत, प्रो. उषा सिन्हा, प्रो. कैलाश देवी सिंह, डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा, डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव, डॉ. विवेक राठौड़ तथा डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय को 'भाषा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

साभार : न्यूज़ ट्राक.कॉम

श्रद्धांजलि

सुषम बेदी

19 मार्च, 2020 को न्यूयॉर्क में सुषम बेदी का निधन हो गया। आप 74 वर्ष की थीं। आपका जन्म 1 जुलाई, 1945 को फिरोज़पुर, पंजाब में हुआ था। 1985 से आप कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफ़ेसर के रूप में कार्यरत रहीं।

आपकी पहली कहानी 1978 में प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'कहानी' में प्रकाशित हुई और तब से नियमित रूप से आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं। 1979 से आप संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में जा बसीं और अपने अंतिम समय तक निरंतर सृजनरत रहीं। सुषम बेदी उपन्यास, कहानी, कविता और आलोचना सभी विधाओं में निरंतर लिखती रहीं। अमेरिका में रहने वाले दक्षिण एशियाई लोगों के जीवन को आपने अपनी रचनाओं में बहुत बारीकी से उकेरा है।

प्रोफ़ेसर बनने से पहले 1960 से लेकर 1970 तक आपने कई भारतीय फ़िल्मों में एक अभिनेत्री के तौर पर काम किया। न्यूयॉर्क में बस जाने के बाद आपने वहाँ के कई टेलीविजन कार्यक्रमों और कुछ फ़िल्मों में काम किया।

आपने 'नवभूम की रसकथा', 'गाथा अमर बेल की', 'हवन', 'लौटना', 'इतर', 'मोर्चे' जैसे उपन्यासों की रचना की। आपके कहानी-संग्रहों में शामिल हैं 'चिड़िया और चील' तथा 'कतरा दर कतरा'। आपका कविता-संग्रह 'शब्दों की खिड़कियाँ' और आलोचना 'हिंदी नाट्य : प्रयोग के संदर्भ में' प्रकाशित हैं।

आपको केन्द्रीय हिंदी संस्थान एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित भी किया गया।

साभार : वेबदुनिया हिंदी तथा श्री तेजेन्द्र शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ

पद्मश्री गिरिराज किशोर

9 फ़रवरी, 2020 को पद्मश्री से सम्मानित साहित्यकार गिरिराज किशोर का निधन

हो गया। आप 83 वर्ष के थे। आपका जन्म 8 जुलाई, 1937 को मुज़फ़्फ़रनगर में हुआ था। आप हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक सशक्त कथाकार, नाटककार और आलोचक थे।

आपका उपन्यास 'ढाई घर' अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। 1991 में प्रकाशित इस कृति को 1992 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। आपको 2007 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। गिरिराज किशोर द्वारा लिखा गया 'पहला गिरमिटिया' नामक उपन्यास महात्मा गांधी के अफ़्रीका प्रवास पर आधारित है। गिरिराज किशोर ने कस्तूरबा गांधी पर भी एक उपन्यास 'बा' लिखा था। इसमें आपने गांधी जैसे व्यक्तित्व की पत्नी के रूप में एक स्त्री का स्वयं और साथ ही देश के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े दोहरे संघर्ष के बारे में लिखा है।

आप साहित्यकार होने के साथ-साथ आई.आई.टी. कानपुर के कुलसचिव भी रह चुके हैं।

साभार : भारत-दर्शन समाचार

डॉ. गोविन्द रजनीश

30 मार्च, 2020 को जाने-माने अध्येता साहित्यकार, संपादक, आलोचक डॉ. गोविन्द रजनीश का देहांत हो गया। आपका जन्म 10 सितंबर, 1938 को राजस्थान के वैर कसी में हुआ था। आपने 37 वर्षों तक विश्वविद्यालयों में उच्च अध्यापकीय कार्य से एक पूरी पीढ़ी तैयार की थी। आप उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा-सलाहकार तथा कन्हैया मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के निदेशक रहे।

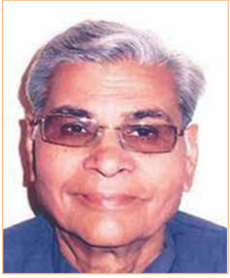

आपके प्रकाशनों में प्रमुख हैं 'समकालीन हिंदी कविता की संवेदना', 'साहित्य का सामाजिक यथार्थ', 'पुनश्चिंतन', 'समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य', 'रांगेय राघव का रचना-संसार', 'नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति', 'रहीम ग्रंथावली', 'सत्यनारायण ग्रंथावली', 'रैदास रचनावली', 'नामदेव रचनावली', 'पंचामृत और पंचरंग', 'लोक महाकाव्य : आल्हा', 'हरदौल लोकगाथा', 'राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोकसाहित्य' तथा 'ब्रज की लोकगाथाएँ'। आपने साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडिया लिट्रेचर' के छह खंडों के लिए लेखन किया।

आप सहस्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन, केंद्र सरकार, उ.प्र. सरकार, उ.प्र. हिंदी संस्थान, सत्यनारायण-स्मारक-समिति, आगरा विश्वविद्यालय तथा लोक परिषद् आदि महत्त्वपूर्ण संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं।

साभार : श्री जयप्रकाश मानस का फ़ेसबुक पृष्ठ

डॉ. खगेंद्र ठाकुर

13 जनवरी, 2020 को प्रसिद्ध साहित्यकार, समीक्षक व आलोचक डॉ. खगेंद्र ठाकुर का निधन हो गया। आप 83 वर्ष के थे। आपका जन्म 9 सितंबर, 1937 को गोड्डा ज़िले के मालिनी गाँव में हुआ था। आप प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थे। आप अन्य संगठनों व विचारधारा से जुड़े साहित्यकार भी थे। आप भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के झारखंड राज्य कार्यकारिणी सदस्य भी थे। आप भागलपुर विश्वविद्यालयों में प्राध्यापक भी रह चुके। आप वामपंथ से प्रभावित थे, तथापि आपने अन्य विचारधारा के साहित्यकारों की उपेक्षा नहीं की।

डॉ. खगेंद्र ठाकुर हिंदी साहित्यालोचन के शिखर पुरुष थे। आपने कई विधाओं जैसे कविता, आलोचना और व्यंग्य में अपनी कलम चलायी। आपकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं : आलोचना - 'विकल्प की प्रक्रिया', 'आज का वैचारिक संघर्ष मार्क्सवाद', 'आलोचना के बहाने', 'समय, समाज व मनुष्य', 'कविता का वर्तमान', 'छायावादी काव्य भाषा की विवेचना', 'दिव्या का सौंदर्य', 'रामधारी सिंह 'दिनकर' : व्यक्तित्व और कृतित्व'; कविता-संग्रह - 'धार एक व्याकुल' तथा 'रक्त कमल परती पर' एवं व्यंग्य - 'देह धरे को दंड' तथा 'ईश्वर से भेंटवार्ता'। आपने दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर व्यापक रूप से कार्य किया और उनपर एक अत्यंत मूल्यवान समालोचनात्मक ग्रंथ लिखा। काव्य-शास्त्र पर आपका 'छायावादी काव्य की भाषा' नामक ग्रंथ प्रकाशित है। आपने आलोचना की अनेक पुस्तकों के माध्यम से इस सारस्वत विधा को समृद्ध किया। आपने मार्क्सवाद और वर्तमान राजनीति से संबंधित कई पुस्तकों का सृजन किया।

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन ने अपनी स्थापना के शती-वर्ष के अवसर पर आपको 'शताब्दी-सम्मान' से अलंकृत किया था।

आभार : डॉ. अनिल सुलभ, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा दैनिक भास्कर

डॉ. सच्चिदानंद सिंह 'साथी'

15 जनवरी, 2020 को समाजसेवी, साहित्यकार और पटना विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर डॉ. सच्चिदानंद सिंह 'साथी' का निधन हो गया। आप 85 वर्ष के थे। आप एक गुणी साहित्यकार, एक विद्वान प्राध्यापक और प्रभावशाली वक्ता ही नहीं, एक कर्मठ संगठनकर्ता भी थे। आप अपने मित्रों और सहयोगियों के प्रति सदैव जागरूक और संवेदनशील रहते थे। इस प्रकार आपका उपनाम 'साथी' सार्थक सिद्ध हुआ। आप समाज के प्रति अपने गुरुत्तर दायित्व को समझते थे। महात्मा बुद्ध के दिव्य आह्वान - "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकंपाय चरैवेति-चरैवेति" के सिद्धांत पर आपने 'चरैवेति' नामक संस्था की स्थापना की थी और उसके माध्यम से समान विचार धर्मी लोगों को जोड़ते और समाज की सर्वतोभावेन हित के लिए निरंतर सक्रिय रहे। आप जीवन-पर्यन्त एक शिक्षक और अभिभावक की भूमिका में रहे। आप अपने शिष्यों और नई पीढ़ी के मार्गदर्शन के कार्य में सदैव आगे रहते थे।

आभार : डॉ. अनिल सुलभ, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन

श्री कृष्ण बलदेव वैद

6 फ़रवरी, 2020 को हिंदी के आधुनिक गद्य-साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार श्री कृष्ण बलदेव वैद का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 27 जुलाई, 1927 को पंजाब के दिंगा गाँव में हुआ था। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया और हार्वर्ड विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप 1950 से 1966 के बीच हंसराज कॉलिज, दिल्ली और पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में अंग्रेज़ी साहित्य के अध्यापक रहे। आपने 1966 से 1985 के मध्य न्यूयॉर्क स्टेट युनिवर्सिटी, अमेरिका और 1968-69 में ब्रेंडाइज़ युनिवर्सिटी में अंग्रेज़ी और अमेरिकी-साहित्य का अध्यापन किया। 1985 से 1988 के मध्य आप भारत भवन, भोपाल में 'निराला सृजनपीठ' के अध्यक्ष रहे। आपकी लेखनी में मनुष्य जीवन के नाटकीय संदर्भों की गहरी पहचान है। आपने अपनी रचनाओं में सदा नए से नए और मौलिक भाषाई प्रयोग किए हैं। 'उसका बचपन', 'बिमल उर्फ़ जाएँ तो जाएँ कहाँ', 'तसरीन', 'दूसरा न कोई', 'दर्द ला दवा', 'गुज़रा हुआ ज़माना', 'काला कोलाज', 'नर नारी', 'माया लोक', 'एक नौकरानी की डायरी', 'खाली किताब का जादू', 'प्रवास गंगा' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आपको साहित्य अकादमी आवर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

द वायर.कॉम तथा विकिपीडिया से साभार

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

सूचना

विश्व हिंदी पत्रिका 2020 के लिए शोध आलेख आमंत्रित

'विश्व हिंदी पत्रिका' विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित एक अंतरराष्ट्रीय वार्षिक शोध पत्रिका है, जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, चुनौतियों एवं संभावनाओं, हिंदी भाषा, साहित्य एवं शिक्षण के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, हिंदी पत्रकारिता एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित महत्त्वपूर्ण मौलिक व सूचनापरक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं।

विश्व हिंदी पत्रिका के पूर्व अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

पत्रिका के 12वें अंक के लिए सचिवालय विश्व भर के हिंदी विद्वानों, शोधार्थियों व चिंतकों की ओर से शोध आलेख आमंत्रित कर रहा है।

नियम व शर्तें :

- लेख का शोधपरक होना अनिवार्य है।
- लेख के साथ संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न करना चाहिए।
- लेख लगभग 3000 शब्द संख्या का होना चाहिए।
- लेख यूनिकोड फ़ॉण्ट में टंकित होना चाहिए।
- संपादक मंडल द्वारा स्वीकृति मिलने पर ही आलेख प्रकाशित किया जाएगा।
- आलेख अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) व मौलिक एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र होना चाहिए। संपादक मंडल द्वारा लेख स्वीकृत होने की स्थिति में मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए विनम्र मानदेय दिया जाएगा।
- लेखक का संक्षिप्त परिचय, मोबाइल नंबर, ईमेल पता, एक पासपोर्ट आकार चित्र एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- आलेख डाक द्वारा अथवा ईमेल : **vhpatrika2018@gmail.com** पर भेजा जा सकता है।
- अंतिम तिथि **14 अगस्त, 2020** है।

विश्व हिंदी साहित्य 2020 के लिए रचनाएँ आमंत्रित

विश्व हिंदी सचिवालय वर्ष 2018 से एक वार्षिक अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' का प्रकाशन कर रहा है। इसमें गद्य एवं पद्य विधाओं में विश्व के विभिन्न रचनाकारों द्वारा रचित कहानी, लघुकथा, काव्य, क्षणिका, ग़ज़ल, हाइकु, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, रेखाचित्र, व्यंग्य, रिपोर्ताज, डायरी एवं साक्षात्कार को स्थान दिया जाता है।

'विश्व हिंदी साहित्य' के अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

'विश्व हिंदी साहित्य' के तृतीय अंक हेतु विश्व भर के हिंदी रचनाकारों की ओर से रचनाएँ आमंत्रित हैं।

नियम एवं शर्तें :

- प्रत्येक रचनाकार की **एक** ही रचना स्वीकृत की जाएगी।
- रचनाओं की शब्द-संख्या विधाओं के आधार पर स्वीकार्य सीमा की होनी चाहिए।
- प्रत्येक रचना अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) व मौलिक एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र होनी चाहिए।
- रचना यूनिकोड फ़ॉण्ट में टंकित होनी चाहिए।
- रचनाकार का संक्षिप्त परिचय, मोबाइल नंबर, ईमेल पता, एक पासपोर्ट आकार चित्र एवं रचना के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- संपादक मंडल द्वारा रचना स्वीकृत होने पर ही पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।
- रचना डाक द्वारा अथवा ईमेल : **vhsahitya2019@gmail.com** पर भेजी जा सकती है।
- अंतिम तिथि **21 अगस्त, 2020** होगी।

विश्व हिंदी दिवस 2021

के उपलक्ष्य में आयोजित

'अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता'

प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है :

1. **अफ़्रीका व मध्य पूर्व**
2. **अमेरिका**
3. **एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त)**
4. **यूरोप**
5. **भारत**

प्रत्येक क्षेत्र के विजेताओं को **प्रमाण-पत्र** व निम्नलिखित **नकद पुरस्कार** प्रदान किए जाएँगे :

प्रथम पुरस्कार	:	**300 अमेरिकी डॉलर**
द्वितीय पुरस्कार	:	**200 अमेरिकी डॉलर**
तृतीय पुरस्कार	:	**100 अमेरिकी डॉलर**

परिणामों की घोषणा विश्व हिंदी दिवस 2021 के समारोह के अवसर पर की जाएगी।

नियम व शर्तें :

- व्यंग्य-लेखन गद्य रूप में होना चाहिए।
- प्रत्येक प्रतिभागी से केवल एक ही प्रविष्टि स्वीकार की जाएगी।
- रचना देवनागरी लिपि में टंकित होनी चाहिए।
- रचना अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) एवं मौलिक तथा कॉपीराइट से स्वतंत्र होनी चाहिए।
- प्रविष्टि पर प्रतिभागी का नाम, हस्ताक्षर और अन्य विवरण न हों। नाम, पता, फ़ोन नंबर तथा ईमेल पता एक अलग पृष्ठ पर लिखकर संलग्न करना अनिवार्य है।
- प्रविष्टि भौगोलिक क्षेत्र की नागरिकता के आधार पर स्वीकार की जाएगी। अतः नागरिकता का प्रमाण (पासपोर्ट/आई.डी. कार्ड/आधार कार्ड की प्रति) प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- लिफ़ाफे के ऊपरी बाएँ कोने पर अथवा ईमेल के विषय के रूप में **'अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता'** तथा **'भौगोलिक क्षेत्र'** लिखा होना चाहिए।
- निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
- विश्व हिंदी सचिवालय को व्यंग्य रचना के प्रकाशन का अधिकार होगा।
- प्रविष्टि डाक द्वारा अथवा ईमेल : **whscompetitions@gmail.com** पर भेजी जा सकती है।
- अंतिम तिथि **11 सितंबर, 2020** होगी।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा हिंदी का सबसे बड़ा साहित्यकार कोश निर्माण

हिंदी का दायरा बढ़े और राष्ट्रभाषा के अलंकरण से हिंदी सुशोभित हो इस उद्देश्य से 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान', इन्दौर के तत्वावधान में हिंदी साहित्यकारों का एक समुच्चय, साहित्यकारों का एक लिखित संगम, एक राष्ट्रव्यापी साहित्यकार कोश तैयार हो रहा है, जो निश्चय ही राष्ट्र की धरोहर होगा। हिंदी के साहित्यकार आपस में एक दूसरे से जुड़ें, सब मिलकर हिंदी भाषा की सतत समृद्धि हेतु प्रतिबद्ध रहें, इसी उद्देश्य की सार्थकता के लिए प्रत्येक राज्य, ज़िले, नगर, ग्राम से हिंदी रचनाकारों का परिचय कोश संकलित होकर सभी के लिए उपलब्ध रहेगा। इसका प्रकाशन संस्मय प्रकाशन से होगा। भारत में रहने वाले रचनाकार अपना परिचय या अपने शहर के साहित्यकारों, कवियों, लेखकों आदि का परिचय प्रेषित कर सकते हैं, जिसके लिए किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। लगभग 500 से अधिक पृष्ठों के इस बहुपयोगी कोश के प्रकाशन के लिए देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत लेखक / कवि / साहित्यकारों / कथाकार / रचनाकार / ग़ज़लकार / साहित्यिक संस्थान / प्रशिक्षण संस्थानों आदि के नाम व पते संकलित किए जाने का कार्य तेज़ गति से चल रहा है। इस कोश का संपादन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' एवं राष्ट्रीय महासचिव व भाषा-विज्ञानी कमलेश कमल द्वारा किया जा रहा है। गर्वानुभूति है कि अब तक प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर ही यह कोश भारत का सबसे बड़ा साहित्यकार कोश बन चुका है।

सभी साहित्यकारों से अनुरोध है कि वे अपना व अपने संस्थान, वेबसाइटों आदि का संपूर्ण विवरण ईमेल- hindisahityakarkosh@gmail.com पर भेजें, ताकि उसे 'साहित्यकार कोश' के प्रथम संस्करण में ही शामिल किया जा सके।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
3 फ़रवरी, 2020

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : +230 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक पृष्ठ : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

संपादकीय

विश्व हिंदी दिवस की सार्थकता

विश्व भर में विश्व हिंदी दिवस के भव्य आयोजन की रिपोर्ट हर साल विश्व हिंदी सचिवालय के सूचना-पत्र 'विश्व हिंदी समाचार' के मार्च अंक की शोभा बढ़ाती है। हिंदी भाषा के संदर्भ में विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व का सबसे बड़ा समारोह माना जाता है। 10 जनवरी, 1975 को भारत के नागपुर शहर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पहली बार के लिए हिंदी का विश्व रूप उभरकर सामने आया था। इसी सम्मेलन के अंतर्गत हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रचार हेतु लिये गए दृढ़ संकल्प के साथ विश्व हिंदी दिवस की परम्परा जुड़ी हुई है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के बाद जैसे-जैसे विश्व के अलग-अलग देशों में विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन होता गया, वैसे-वैसे 'हिंदी विश्व' की परिकल्पना सुदृढ़ होती गयी।

सन् 2003 में सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी दिवस मनाने के सुझाव को भारत के विदेश मंत्रालय ने सहर्ष स्वीकार किया था और भारत सरकार ने हर 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया था। विश्व हिंदी सम्मेलनों की अनुवर्ती कार्यवाही के फलस्वरूप सन् 2006 से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के संकल्प को दोहराने, हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के प्रयासों को गति देने और हिंदी की अनुगूंज को दूर-दूर तक पहुँचाने के उद्देश्य से विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। भारत के विदेश मंत्रालय ने इस साल पंद्रहवाँ विश्व हिंदी दिवस का समारोहपूर्वक आयोजन किया। इसके अतिरिक्त विश्व भर के भारतीय मिशनों, दूतावासों और केन्द्रों तथा विश्व के अनेक हिंदी प्रचारक संगठनों एवं संस्थाओं द्वारा बड़े उत्साह के साथ विश्व हिंदी दिवस मनाया गया, जिसमें भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी का संदेश पढ़ा गया। इस साल विश्व हिंदी दिवस के अपने प्रेरक संदेश में माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सूचना-क्रान्ति और अटल विकास की भाषा बनने की ओर हिंदी के अग्रसर होने का उल्लेख करते हुए यह दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि विश्व भर में हिंदी का प्रसार निर्बाध रूप से जारी रहेगा।

आज विश्व संदर्भ में जब हिंदी की भूमिका सुनिश्चित की जा रही है, तब अधिक-से-अधिक देशों में विश्व हिंदी दिवस की धूम मचना स्वाभाविक है। न्यूयॉर्क के इंडिया हाउस, बहरीन के इंडियन स्कूल, कनाडा के ग्रेटर टोरंटो एरिया, तेहरान के केन्द्रीय विद्यालय, बेइजिंग के कल्चर विंग, कैरो के मौलाना आज़ाद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, ओमान के हिंदी विंग, दोहा के भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, पुर्तगाल के लिस्बन विश्वविद्यालय, इजरायल के तेल-अवीव विश्वविद्यालय, गयाना के बरबीस विश्वविद्यालय, जर्मनी के हेम्बर्ग विश्वविद्यालय, स्पेन के 'कासा दे ला इंडिया' भारत भवन, भूटान के नेहरु वांगचुक सांस्कृतिक केंद्र अर्थात् विश्व के कोने-कोने में या यूँ कहें पाँचों महाद्वीपों में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी के प्रचारक, साहित्यकार, शिक्षक, छात्र एवं हिंदी प्रेमी उत्साहपूर्वक एकत्रित होते हैं और हिंदी में भाषण के अतिरिक्त कविता-पाठ, पुस्तक-लोकार्पण, नाटक-मंचन, फ़िल्मों का प्रदर्शन, हिंदी पुस्तक मेला, गीत-प्रस्तुति आदि विविध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जिनके माध्यम से हिंदी के महत्त्व पर बल दिया जाता है तथा भारत के साथ संबंध की प्रगाढ़ता का रेखांकन भी किया जाता है।

विश्व हिंदी सचिवालय में विश्व हिंदी दिवस की तैयारियाँ चार महीने पूर्व अंतरराष्ट्रीय हिंदी लेखन प्रतियोगिता के साथ आरम्भ हो जाती हैं। इसके पश्चात् सचिवालय की कार्यक्रम एवं गतिविधि उप-समिति द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अतिथि वक्ता के रूप में अभारतीय मूल के एक हिंदी विद्वान को आमंत्रित करने का निर्णय लिया जाता है। 2009 में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा पहली बार आयोजित विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेश से अतिथि वक्ता को आमंत्रित करने की परिपाटी शुरू नहीं हुई थी। उस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर नामी मॉरीशसीय हिंदी सेवकों - श्री सुरेश रामबर्ण, श्री रामदेव धुरंधर, श्री सूर्यदेव सिबोरथ और श्री महेश रामजियावन से प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में अपनी भागीदारी के संस्मरण सुनाने का अनुरोध किया गया था।

2010 से 2020 तक क्रमिक रूप से हंगरी से डॉ. मारिया नज्येशी, कोरिया से प्रो. किम वू जो, पोलैंड से प्रो. दानुता स्ताशिक, अमेरिका से प्रो. हरमन वान ओलफ़ेन, जापान से प्रो. ताकेशी फूजिई, रशिया से प्रो. ल्युद्मिला खखलोवा, ऑस्ट्रेलिया से डॉ. पीटर फ्रिडलैंडर, चीन से प्रो. जियांग जिंग खुई, उज़्बेकिस्तान से डॉ. सिरोजुद्दीन सुलतान मुरातोविच नुर्मातोव, न्यूयॉर्क से प्रो. गब्रिएला निक इलिएवा और इंगलैंड से डॉ. इमरे बंघा विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह के अतिथि वक्ता बने और उन्होंने अपने देश में हिंदी की दशा व दिशा के साथ हिंदी के वैश्विक स्वरूप पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। ध्यातव्य है कि हर साल एक अभारतीय मूल के हिंदी प्रचारक का विश्व हिंदी दिवस समारोह में अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित होना और प्रवाहपूर्ण व शुद्ध हिंदी बोलना यह प्रमाणित करता है कि हिंदी विश्व भाषा है। इस समारोह में मुख्य अतिथि अथवा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित मॉरीशस के शिक्षा-मंत्री और कला एवं विरासत मंत्री हिंदी में व्याख्यान देकर हिंदी की विजय की अनुभूति कराते हैं। समारोह के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय लेखन प्रतियोगिता के पाँच भिन्न प्रदेशों के विजेताओं के नामों की घोषणा करना, मॉरीशस के विजेताओं को पुरस्कृत करना, विश्व हिंदी पत्रिका के नए अंक का लोकार्पण करना और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करना हिंदी की वृद्धि के ही सूचक हैं।

यद्यपि हिंदी के अंतरराष्ट्रीय विस्तार में विश्व हिंदी दिवस की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, तथापि यह भी सर्वविदित है कि हिंदी का वैश्विक प्रचार मात्र विश्व हिंदी दिवस मनाने से नहीं, अपितु हिंदी को उन्नत करने के व्यावहारिक प्रयासों को गति देने से ही बढ़ेगा। विश्व हिंदी दिवस के व्यावहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। एक ओर भारत सरकार का प्रयास है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़े और हिंदी विदेश नीति और कूटनीति की भाषा बने। भारत सरकार के प्रयासों से ही संयुक्त राष्ट्र संघ के वेबसाइट एवं सोशल मीडिया प्लेटफ़ोर्मों में हिंदी की उपस्थिति में वृद्धि हुई है तथा हर शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र संघ में विश्व हिंदी समाचार प्रसारित होता है। अब तक ग्यारह विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी प्रमाणित करता है कि भारत हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में कटिबद्ध है।

भारत से बाहर विश्व के अन्य देशों में भी यह प्रयास किया जा रहा है कि हिंदी की शिक्षण सामग्री में वृद्धि हो, डिजिटल माध्यम से हिंदी सिखाई जाए, हिंदी में सॉफ़्टवेर एवं शब्दकोश बने और हिंदी में साहित्येतर विषयों पर पुस्तकें छपें। इन प्रयासों के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि हर हिंदी भाषी आत्म-विश्लेषण कर अपने स्वतः के स्तर पर हिंदी को बढ़ावा दे तथा हिंदी विश्व भर में अभिव्यक्ति का माध्यम बने। इसके अतिरिक्त यदि विश्व हिंदी सम्मेलनों की अनुशंसाओं पर अधिक गंभीरता से कार्रवाई हो, प्रवासी भारतीय और सभी हिंदी संस्थाएँ एक सूत्र में बंधकर हिंदी की सेवा करें, हिंदी भाषा रोज़गार से भी जुड़े और हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँचाने के लिए भारत में, मॉरीशस में और पूरे विश्व में जनमत तैयार हो, तो हिंदी का संवर्धन निश्चित है। जैसे-जैसे विश्व मंच पर सर्वाधिक प्रतिष्ठित भाषा के रूप में हिंदी उभरती जाएगी, वैसे-वैसे 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने की सार्थकता सिद्ध होती जाएगी।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव